

कमल संदेश



आयुष्मान भारत योजना का शुभारम्भ

वर्ष-13, अंक-20

16-31 अक्टूबर, 2018 (पाक्षिक)

₹20



कार्यकर्ता महाकुंभ, भोपाल
'जितना कीचड़ उछालोगे,
उतना ही कमल खिलेगा'



भोपाल (मध्य प्रदेश) में आयोजित 'कार्यकर्ता महाकुंभ' में अभिवादन स्वीकार करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान व अन्य वरिष्ठ भाजपा नेतागण



पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मारक धानक्या, जयपुर (राजस्थान) में पं. दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह



सीकर (राजस्थान) में पूर्व-सैनिक सम्मेलन के दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं का अभिवादन स्वीकार करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह



वीकानेर (राजस्थान) में शक्ति केंद्र सम्मेलन के दौरान भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह का स्वागत करते राजस्थान भाजपा कार्यकर्तागण



भिलाई (छत्तीसगढ़) में गुजराती समाज सम्मेलन के दौरान भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह व छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह

संपादक

प्रभात झा

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्शी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

राम नयन सिंह

कला संपादक

विकास सैनी

मुकेश कुमार

संपर्क

फोन: +91(11) 23381428

फैक्स

फैक्स: +91(11) 23387887

ई-मेल

mail.kamalsandesh@gmail.com

mail@kamalsandesh.com

वेबसाइट: www.kamalsandesh.org



देश पर बोझ बन गई है कांग्रेस पार्टी : नरेन्द्र मोदी



भारतीय जनता पार्टी की ताकत उसके कार्यकर्ता हैं। ये कार्यकर्ता मुसीबतों से घबराए बिना, दबावों के आगे झुके बिना और प्रलोभनों से डिगे बिना पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के सपनों को साकार करने के लिए विजय का संकल्प लेकर आगे बढ़ते हैं। देश और दुनिया में सिर्फ भारतीय जनता पार्टी...

वैचारिकी

सांस्कृतिक अधिष्ठान 15

श्रद्धांजलि

भैरोसिंह शेखावत / के. आर. मलकानी 17

लेख

मानव सशक्तीकरण के लिए स्वच्छ पर्यावरण 20

तेल की कीमतों पर विपक्ष का पाखंड 22

राजमाता अपने कार्यों से लोकमाता बनी 24

साक्षात्कार

नित्यानंद राय 18

अन्य

'स्वच्छ भारत मिशन' दुनिया का सबसे बड़ा जनांदोलन 13

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को मिला 'चैपियंस ऑफ द अर्थ' पुरस्कार 21

तिरुपति में 100 उन्नत बिस्तर वाले ईएसआई अस्पताल का उद्घाटन 23

गांधीजी अपने सिद्धांतों के प्रति अंतिम सांस तक प्रतिबद्ध रहे : नरेन्द्र मोदी 26

'बहुआयामी फायदा पहुंचाने वाला फैसला' 28

'बाबा साहब के कर्तृत्व को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास कर रही...' 29

'हमने पूर्वांचल को विकास की धारा से जोड़ने का ऐतिहासिक कार्य...' 30

प्रधानमंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की पहली सभा का उद्घाटन किया 31

भारत-रूस के बीच आठ समझौतों पर हस्ताक्षर 32

मन की बात 33

स्थायी स्तंभ

सोशल मीडिया से 04

व्यंग्य चित्र 04

09 'नवा छत्तीसगढ़ का संकल्प साकार हो रहा है'

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 5 अक्टूबर को नरहरपुर, कांकेर (छत्तीसगढ़) में आयोजित आदिवासी...



11 'फिर एक बार भाजपा, हर बूध-कमल बूध'

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 6 अक्टूबर को अजमेर, राजस्थान में गौरव यात्रा के समापन समारोह के अवसर पर आयोजित...



12 आयुष्मान भारत योजना का शुभारम्भ

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 23 सितंबर को रांची, झारखंड में आयुष्मान भारत योजना यानी प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना...



14 अंजार (गुजरात) में एलएनजी टर्मिनल एवं पाइपलाइन परियोजनाओं का उद्घाटन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 30 सितंबर को अंजार-मुंद्रा परियोजना, मुंद्रा एलएनजी टर्मिनल...



twitter



@narendramodi

जब पुनरुत्थान के बारे में सोचता हूँ तो मन मस्तिष्क में पहली छवि स्वामी विवेकानंद जी की बनती है। उन्होंने शिक्षा के 3 स्तंभ दिए - जीवन निर्माण, मानवता और चरित्रगठन - जो आज भी प्रासंगिक है। इन विचारों से प्रेरित होकर मैंने एक और स्तंभ जोड़ा है - इनोवेशन।

@AmitShah



आजादी से लेकर आज तक किसी भी कांग्रेस सरकार ने समस्या मुक्त गांव की कल्पना नहीं की जबकि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के 'अंत्योदय' सिद्धांत पर चलते हुए गांवों को समस्या मुक्त करने का बीड़ा उठाया है।

@Ramlal



प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने किसानों की आय दोगुनी करने के वादे को पूरा करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए वर्ष 2018-19 से रबी की फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में अभूतपूर्व वृद्धि की, सभी किसान भाइयों को बधाई।

facebook

किसानों को सुरक्षा कवच प्रदान करने की दिशा में हमारी सरकार द्वारा संचालित राज सहकार व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना के तहत बीमा कवर राशि 50 हजार रु से बढ़ाकर 10 लाख रु प्रदान की जा रही है। पहले दुर्घटना या अनहोनी होने पर किसानों को महज 50 हजार रु तक का दुर्घटना बीमा मिलता था। लेकिन भाजपा सरकार ने 50 हजार रु की राशि को 20 गुना बढ़ाकर 10 लाख रु की है, जो किसान भाइयों-बहनों की भावी सुरक्षा को सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण साबित हो रही है।



— वसुंधरा राजे

मध्यप्रदेश सिंचाई क्रांति का साक्षी बना है। सिंचाई का रकबा 7 लाख हेक्टेयर से बढ़कर आज 40 लाख हेक्टेयर हो चुका है, जिसे बढ़ कर 80 लाख हेक्टेयर करने के लिए मध्यप्रदेश सरकार प्रतिबद्ध है।



— शिवराज सिंह चौहान

शिक्षा के साथ संस्कार एवं संस्कृति का जुड़ाव होना अत्यंत जरूरी है। यदि शिक्षा हमको संस्कारी व स्वावलम्बी न बना सके, तो फिर शिक्षा का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। हमारे कर्म हमेशा साथ चलते हैं। छात्र-छात्राओं को सम-विषम परिस्थितियों से बेहतर मुकाबला करने के लिये सशक्त बनना होगा।



— योगी आदित्यनाथ

व्यंग्य चित्र



दिख रहा है व्यापक परिवर्तन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को “चैम्पियन्स ऑफ द अर्थ” पुरस्कार से संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा सम्मानित किये जाने से हरेक भारतीय गौरव का अनुभव कर रहा है। यह पुरस्कार न केवल भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का द्योतक है बल्कि श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में हुए पर्यावरण संपोषण के अद्भुत कार्यों का भी सम्मान है। प्रधानमंत्री के करिश्माई नेतृत्व में भारत ने हर क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है तथा पर्यावरण के क्षेत्र में उनके अनूठे योगदान को पूरे विश्व ने सराहा है।

स्वच्छता के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का आह्वान अब एक जनांदोलन में परिवर्तित हो चुका है। 2 अक्टूबर 2014 को ‘स्वच्छता मिशन’ के रूप में शुरू हुए जनांदोलन को भारी जनसमर्थन मिला है। महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरणा प्राप्त इस जनांदोलन से कार्य-संस्कृति, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के लिए लोगों में जबरदस्त जागरूकता आई है और विश्व के सफलतम कार्यक्रमों में इसकी गणना हो रही है। हर भारतीय को इस पर गर्व हो रहा है। गांव के गांव ‘खुले में शौच से मुक्त’ घोषित हो रहे हैं तथा स्वच्छता का दायरा अभूतपूर्व ढंग से बढ़ रहा है। पूरे विश्व को अब इन अभियानों की शक्ति का पता चल रहा है। इस कार्यक्रम से आम जन-जीवन में कितना बड़ा अंतर आया है यह इस बात से प्रमाणित होता है कि आज 85 प्रतिशत घरों में शौचालय है, 40 करोड़ लोग खुले में शौच से

मुक्त हो चुके हैं और स्वच्छता का दायरा 39 प्रतिशत से बढ़कर 95 प्रतिशत हो चुका है। दरअसल, 2 अक्टूबर 2018 को गांधी जयंति के अवसर पर शुरू हुए ‘स्वच्छता ही सेवा’ कार्यक्रम से महात्मा गांधी की 150वीं जयंति के लिये तय किये गये लक्ष्यों को प्राप्त करने में अवश्य सफलता मिलेगी।

देश में शुरू हुए अभिनव जन कल्याण कार्यक्रम जिसके संबंध में पूर्व की सरकारें कभी सोच भी नहीं पाई, आज उनके क्रियान्वयन से आम जन-जीवन एवं गरीब से गरीब व्यक्ति के जीवन में व्यापक परिवर्तन हो रहा है। ‘आयुष्मान भारत’ एक ऐसी ही अभिनव योजना है जिससे गरीब से गरीब व्यक्ति उच्च स्तरीय स्वास्थ्य सेवा निःशुल्क रूप में तो पायेगा ही, साथ ही स्तरीय स्वास्थ्य सेवाओं की आधारभूत संरचना का गांव-गांव तक विकास होगा। आज जबकि हर घर में बिजली पहुंच रही है, शौचालय बन रहे हैं, महिलाओं को रसोईघर में गैस मिल रही है, पेयजल नलों से पहुंचाने की योजना चल रही है, गरीबों को पक्के आवास मिल रहे हैं, गांवों का जन-जीवन अभूतपूर्व परिवर्तन का साक्षात्कार कर रहा है। यह व्यापक परिवर्तन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की दिन-रात की कड़ी मेहनत का परिणाम है कि जो कुछ वर्षों पहले तक असंभव सा प्रतीत होता था, आज संभव बन गया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर दृढ़ राजनैतिक इच्छाशक्ति से निर्णय लेने के कारण देश में आत्मगौरव का भाव बढ़ा है। घरेलू मामले में अनगिनत उपलब्धियों के साथ-साथ विश्व पटल पर भी उन्होंने अपनी मजबूत छाप छोड़ी है। हाल ही में रूस के साथ एस-400 ट्रायम्फ मिसाइल सिस्टम पर हुए समझौते पर अमेरिकी प्रतिबंधों के बावजूद हस्ताक्षर कर श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी चट्टानी दृढ़ता का परिचय दिया है। साथ ही, ईरान मसले पर भी उनकी कूटनीति को सराहा जा रहा है। हालांकि भविष्य में अमेरिका का क्या रुख होगा, कोई नहीं जानता, परन्तु जो दृढ़ता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिखाई है, उससे स्पष्ट है कि भारत भविष्य में बिना किसी बाहरी या अंदरूनी दबाव के सामने झुके, अपना निर्णय स्वतंत्र रूप से स्वयं लेगा। ‘राष्ट्र प्रथम’ नीति के विजय का यह एक अनुपम उदाहरण है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व के समक्ष यह प्रमाणित कर दिया है कि भारत आगे बढ़कर नेतृत्व कर सकता है और एक विकसित देश के रूप में उभरने के लिये तत्पर है। एक ओर जहां गरीब से गरीब को गरीबी के दलदल से उबारने लिये चल रहे एक व्यापक परिवर्तन की बयार का पूरा देश अनुभव कर रहा है, वहीं, दूसरी ओर भारत पूरे विश्व में एक ऐसे देश के रूप में उभर रहा है जो अन्दरूनी एवं बाहरी चुनौतियों के सामने सिर उठाकर खड़ा रह सकता है और अपने निर्णय स्वतंत्र रूप से लेने में सक्षम है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर दृढ़ राजनैतिक इच्छाशक्ति से निर्णय लेने के कारण देश में आत्मगौरव का भाव बढ़ा है। घरेलू मामले में अनगिनत उपलब्धियों के साथ-साथ विश्व पटल पर भी उन्होंने अपनी मजबूत छाप छोड़ी है। हाल ही में रूस के साथ एस-400 ट्रायम्फ मिसाइल सिस्टम पर हुए समझौते पर अमेरिकी प्रतिबंधों के बावजूद हस्ताक्षर कर श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी चट्टानी दृढ़ता का परिचय दिया है।

देश पर बोझ बन गई है कांग्रेस पार्टी : नरेन्द्र मोदी



भारतीय जनता पार्टी की ताकत उसके कार्यकर्ता हैं। ये कार्यकर्ता मुसीबतों से घबराए बिना, दबावों के आगे झुके बिना और प्रलोभनों से डिगे बिना पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के सपनों को साकार करने के लिए विजय का संकल्प लेकर आगे बढ़ते हैं। देश और दुनिया में सिर्फ भारतीय जनता पार्टी ही ऐसी पार्टी है, जो पं. दीनदयाल जी के बताए रास्ते पर चलते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति के कल्याण के लिए राजनीति करती है।

भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता महाकुंभ 25 सितंबर को राजधानी के जंबूरी मैदान पर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में प्रदेश के कोने-कोने से आए लगभग 10 लाख कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। प्रदेश के 65 हजार बूथों से आए इन कार्यकर्ताओं को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह, मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान, राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री रामलाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रभात झा, प्रदेश अध्यक्ष श्री राकेश सिंह, श्री फगगनसिंह कुलस्ते, श्री नंदकुमारसिंह चौहान, श्री थावरचन्द गेहलोत, सुश्री उमा भारती आदि ने सभा को संबोधित किया। सभी वक्ताओं ने कार्यकर्ताओं को पार्टी का आधार बताते हुए आगामी विधानसभा चुनाव और वर्ष 2019 में होने वाले लोकसभा चुनावों में पार्टी की जीत का परचम फहराने के लिए मार्गदर्शन दिया। पार्टी के पितृपुरुष पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती पर आयोजित इस महाकुंभ में उनके सपनों को साकार करने के लिए कार्यकर्ताओं से कड़े परिश्रम और उपलब्ध समय के पार्टी हित में सदुपयोग का आह्वान किया। कार्यकर्ताओं ने अपने दोनों हाथ उठाकर आगामी चुनावों में अपना सर्वश्रेष्ठ देने का संकल्प लिया और वंदे मातरम् के जयघोष से विधानसभा एवं लोकसभा चुनाव में पार्टी की महाविजय का शंखनाद किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 25 सितंबर को पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती के शुभ अवसर पर जम्बूरी मैदान, भोपाल (मध्य प्रदेश) के 'सुंदरलाल पटवा सभागार' में आयोजित ऐतिहासिक कार्यकर्ता महाकुंभ को संबोधित किया और केंद्र सरकार की उपलब्धियों पर विस्तार से चर्चा करते हुए वोटबैंक की राजनीति के लिए कांग्रेस पर बिंदुवार प्रहार किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी एकमात्र ऐसी पार्टी है जिसकी विचारधारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद पर आधारित है। उन्होंने कहा कि हमारे कार्यकर्ता संगठन की शक्ति और विचारधारा के बल पर निष्काम कर्मयोगी की तरह सिर्फ और सिर्फ मां भारती की जय के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर देने वाले लोग हैं। उन्होंने कहा कि पिछले वर्ष हमने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी समारोह मनाया और उनके सिद्धांतों व आदर्शों को जमीन पर उतारने का काम बूथ कार्यकर्ता से लेकर राष्ट्रीय अध्यक्ष तक ने पूरे मनोयोग से किया। उन्होंने कहा कि पंडित दीनदयाल जी का चिंतन, जीवन, आचार और विचार हमारी प्रेरणा है और हम इसी के बल पर आगे बढ़ते रहेंगे।

श्री मोदी ने कहा कि देश के 19 राज्यों में भारतीय जनता पार्टी की सरकार होना गर्व की बात है लेकिन दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी होना उससे भी ज्यादा गर्व की बात है। इसके लिए उन्होंने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह को बधाई देते हुए कहा कि परिश्रम की पराकाष्ठा करने वाले हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित भाई शाह ने हिन्दुस्तान की सभी राजनीतिक पार्टियों को यह चर्चा करने के लिए मजबूर कर दिया है कि एक राजनीतिक पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष कैसा होना चाहिए।

श्री मोदी ने कहा कि यदि पहले की कांग्रेस सरकारों ने और कांग्रेस कल्चर ने मध्य प्रदेश का भला चाहा होता तो जो काम भारतीय जनता पार्टी की सरकारों को सौभाग्य प्राप्त हुआ, वह कांग्रेस पार्टी भी कर सकती थी। उन्होंने कहा कि जब तक केंद्र में यूपीए की सरकार थी, भाजपा शासित राज्यों के साथ घोर अन्याय किया गया, मध्य प्रदेश के साथ अन्याय किया गया। उन्होंने कहा कि जिन्होंने मध्य प्रदेश से अन्याय किया, उन्हें सजा मिलनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इस चुनाव में पहली बार उन लोगों को सजा देने का समय आया है जिन्होंने मध्य प्रदेश को 'बीमारू राज्य' की सूची में डालने का पाप किया। उन्होंने कहा कि जनता के आशीर्वाद से आज केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की एक ऐसी सरकार है जो मानती है कि यदि देश को आगे ले जाना है तो राज्यों को मजबूत करना होगा। उन्होंने राज्य की जनता से मध्य प्रदेश की सेवा का मौका देने की अपील करते हुए कहा कि आने वाले पांच साल मध्य प्रदेश के सपनों को साकार करने वाले होंगे जिसे श्री शिवराज ने प्रगति के पथ पर गतिमान किया है। उन्होंने कहा कि आज मध्य प्रदेश देश के हर क्षेत्र की रैकिंग में आगे है, यह हमारी कार्यपद्धति है।

उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के लिए 125 करोड़ देशवासी ही परिवार है, हमारे लिए दल से बड़ा देश है। उन्होंने कहा कि हम राजमाता विजयाराजे सिंधिया की जन्मशती मनाने जा रहे हैं जिन्होंने मूल्यों व आदर्शों के लिए जेल जाना पसंद किया, कांग्रेस के सामने झुकना मंजूर नहीं किया। हम उनसे प्रेरणा और उनके आशीर्वाद के साथ हम चुनाव मैदान में उतरेंगे।

इलकियां

- ▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह जब मंच पर पहुंचे तो पूरा पंडाल भाजपा जिंदाबाद और मोदी-मोदी के नारों से गूंज उठा।
- ▶ कार्यक्रम स्थल पर प्रसिद्ध गायक कैलाश खेर ने अपनी मधुर आवाज से समा बांध दिया, उनके गीतों पर कार्यकर्ता झूमने लगे।
- ▶ महाकुंभ में प्रदेश के सभी जिलों से कार्यकर्ता शामिल हुए। आदिवासी अंचल से आए कार्यकर्ता ने अपनी पारंपरिक वेशभूषा पहने हुए थे।
- ▶ कार्यक्रम में विभिन्न अंचल से आए कार्यकर्ताओं ने लोकनृत्य के माध्यम से अपने उत्साह को प्रकट किया।
- ▶ महाकुंभ में कार्यकर्ताओं के साथ छोटे बच्चे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की वेशभूषा में तैयार होकर आए हुए थे जो आकर्षण का केन्द्र रहे।
- ▶ अन्नपूर्णा स्थल में 11 पंडालों में कार्यकर्ताओं के भोजन की व्यवस्था की गयी थी। वहीं, भोपाल के प्रवेश मार्गों पर भी भोजन की सुविधा उपलब्ध कराई गई।
- ▶ यातायात व्यवस्था को लेकर चाक-चैबंद इंतजाम किए गए थे। अलग-अलग पार्किंग की व्यवस्थाएं की गयी थीं।
- ▶ राजधानी में लाखों की संख्या में भाजपा कार्यकर्ताओं का जनसैलाब उमड़ा था। कहीं भी यातायात बाधित नहीं हुआ और नागरिकों को असुविधा नहीं हुई।

प्रधानमंत्री ने कहा कि कांग्रेस पार्टी हिन्दुस्तान में गठबंधन करने में सफल नहीं हो रही, इसलिए भारत के बाहर गठबंधन खोजा जा रहा है। क्या कांग्रेस पार्टी ने सत्ता खोने के बाद अपना संतुलन भी खो दिया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी देश पर बोझ बन गई है, ऐसे पार्टी से देश को बचाना भी जागरूक नागरिकों का कर्तव्य है।

श्री मोदी ने कहा कि 2001 से लेकर आज तक, जब से मैं राजनीति में आया हूँ, कांग्रेस पार्टी अपनी पूरी ताकत से मुझको लगातार शब्दकोष से ढूँढ़-ढूँढ़ कर अपशब्द कहती आ रही है लेकिन कांग्रेस पार्टी को मालूम होना चाहिए कि जितना अधिक कीचड़ हम पर उछाला है, कमल उतना ही ज्यादा खिला है। उन्होंने कहा कि दो दशक से ज्यादा से कांग्रेस पार्टी की अपशब्दों की यह राजनीति जनता के गले से नीचे नहीं उतरी है, जनता ने सिर से कांग्रेस पार्टी को खारिज कर दिया है।

कांग्रेस को विकास पर बहस की चुनौती देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारे विरोधी हमसे विकास पर बहस करें, हमारी आलोचना भी विकास के लिए करें लेकिन हमारे विरोधियों में इसके लिए ताकत नहीं है, उनके लिए सरल रास्ता है कीचड़ उछालो। उन्होंने कहा कि हमारे विरोधी जितना भी कीचड़ उछालेंगे, कमल उतना ही घर-घर में, हर बूथ में, देश के कोने-कोने में और खिलेगा, देश की हर सरकार कमल पर खिलेगी। ■

हम प्रदेश को समृद्ध राज्य बनाने के लिए कृतसंकल्पित हैं : अमित शाह

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने जम्बूरी मैदान, भोपाल (मध्य प्रदेश) के 'सुंदरलाल पटवा सभागार' में आयोजित ऐतिहासिक कार्यकर्ता महाकुंभ को संबोधित किया और देश को विकास से महरूम रख कर जनता को गुमराह करने के लिए कांग्रेस पार्टी पर जमकर तीखे हमले किये। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी प्रचंड बहुमत के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र में और श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में मध्य प्रदेश में सरकार बनाने जा रही है।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की भूरि-भूरि सराहना करते हुए श्री शाह ने कहा कि जिस तरह से बिना किसी कागज़ के श्री शिवराज जी ने मध्य प्रदेश की विकास गाथा के आंकड़े प्रस्तुत किये, वह अद्भुत है। उन्होंने कहा कि जब लोक सेवा के संकल्प के साथ विकास को ही सरकार का मूल मंत्र बनाया जाता है, तभी ऐसा संभव हो सकता है और श्री शिवराज जी ने मध्य प्रदेश में यह चरितार्थ करके दिखाया है। उन्होंने कहा कि श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में मध्य प्रदेश विकास के पथ पर तेज गति से अग्रसर है। आने वाले पांच सालों में हम प्रदेश को समृद्ध राज्य बनाने के लिए कृतसंकल्पित हैं।

राहुल गांधी पर कड़ा प्रहार करते हुए भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान, तीनों राज्यों में जीत का स्वप्न देख रहे हैं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी को स्वप्न देखने की आजादी है, लेकिन वे जनता से वोट किस आधार पर मांगने जायेंगे। यूपीए की उनकी सरकार ने 10 वर्षों में 12 लाख करोड़ रुपये के घपले-घोटाले किये, इस आधार पर या एक अनिर्णायक सरकार के आधार पर जिसने सोनिया-मनमोहन के नेतृत्व में देश की सुरक्षा को ताक पर रखते हुए देश को कमजोर कर दिया, देश की अर्थव्यवस्था का बंटोधार कर दिया? क्या राहुल गांधी मध्य प्रदेश में कांग्रेस की राजा, महाराजा और उद्योगपति की तिकड़ी राजनीति के आधार पर प्रदेश में वोट मांगने जायेंगे? उन्होंने कहा कि 2014 के लोक सभा चुनाव से लेकर आज तक देश में हुए लगभग सभी चुनावों में कांग्रेस की करारी हार हुई है, जबकि भारतीय जनता पार्टी की अभूतपूर्व विजय हुई है, मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में भी कांग्रेस का यही बुरा हथ्र होने वाला है।

श्री शाह ने कहा कि मध्य प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार से पहले 10 साल तक श्रीमान बंटोधार सरकार के नाम से मशहूर कांग्रेस की सरकार थी। राज्य में 45 से अधिक वर्षों तक कांग्रेस का शासन रहा, लेकिन उसका परिणाम यह हुआ कि मध्य प्रदेश विकास में लगातार पिछड़ता ही चला गया। उन्होंने कहा कि

आज राज्य में 18 सालों से भारतीय जनता पार्टी जनता की सेवा कर रही है और विकास दिन दुगुने, रात चौगुने की गति से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि पहले जब केंद्र में सोनिया-मनमोहन की सरकार थी, तो मध्य प्रदेश के साथ भेदभाव किया जाता था। केंद्र की विकास परियोजनाओं में मध्य प्रदेश सहित भाजपा शासित तमाम राज्यों के साथ अन्याय किया जाता था, लेकिन अब जनता के आशीर्वाद से केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की मोदी सरकार है। अब मध्य प्रदेश के विकास के लिए डबल इंजन काम कर रहा है और विकास की यह यात्रा निरंतर जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि यह मध्य प्रदेश है, यहां भारतीय जनता पार्टी का संगठन इतना मजबूत है कि कांग्रेस के नाम पर तो यहां की जनता विचार भी नहीं करेगी।

एनआरसी पर कांग्रेस को आड़े हाथों लेते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि जैसे ही हमने अवैध घुसपैठिये की पहचान के लिए एनआरसी बनाने की शुरुआत की तो कांग्रेस एंड कंपनी ने हाथ-



तौबा मचाना शुरू किया। उन्होंने कहा कि देश से अवैध घुसपैठिये जाने चाहिए और इसकी शुरुआत एनआरसी से हो गई है। कांग्रेस को चुनौती देते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस कितना भी करे, घुसपैठिये को मतदाता सूची से निकाल कर ही दम लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के लिए प्राथमिकता देश की सुरक्षा है, वोटबैंक नहीं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सहित तमाम विपक्ष क्यों न अवैध घुसपैठियों के पक्ष में खड़े जाएं, एनआरसी की प्रक्रिया रुकने वाली नहीं है, कांग्रेस को एनआरसी पर अपना रुख स्पष्ट करना चाहिए।

श्री शाह ने कहा कि कांग्रेस हमसे किसी भी विषय में प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर सकती चाहे वह विकास की बात हो, सुरक्षा की बात हो, राष्ट्रभक्ति की भावना की बात हो या देश के अर्थतंत्र को सुधारने की बात। ■

‘नवा छत्तीसगढ़ का संकल्प साकार हो रहा है’



भा रतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 5 अक्टूबर को नरहरपुर, कांकेर (छत्तीसगढ़) में आयोजित आदिवासी सम्मेलन को संबोधित किया और कांग्रेस की नकारात्मक राजनीति पर जमकर प्रहार किया। इसके पश्चात् उन्होंने भिलाई, दुर्ग में विशाल महिला सम्मेलन को संबोधित किया।

महान ऋषियों-मुनियों की तपोभूमि को नमन करते हुए श्री शाह ने कहा कि छत्तीसगढ़ के विकास के लिए प्रतिबद्ध मुख्यमंत्री श्री रमण सिंह ने लगभग राज्य की सभी 90 विधानसभाओं से होती हुए 11 हजार किलोमीटर की जनसंपर्क यात्रा पूरा किया है और विकास को जन-जन तक पहुंचाया है। उन्होंने राज्य की जनता से श्री रमण सिंह को लगातार चौथी बार आशीर्वाद देने की अपील करते हुए कहा कि श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी ने छत्तीसगढ़ को बनाया और अब इसे संवरने का काम रमण सिंह कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ के निर्माण के बाद तीन साल तक कांग्रेस पार्टी का शासन रहा, लेकिन कांग्रेस सरकार ने वनवासी बंधुओं के कल्याण एवं राज्य के विकास के लिए कुछ भी नहीं किया।

राहुल गांधी को चुनौती देते हुए श्री शाह ने कहा कि एक तरफ श्री रमण सिंह सरकार के 15 साल और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार के 5 साल के काम हैं, तो दूसरी ओर कांग्रेस पार्टी की चार पीढ़ियों की 55 सालों की सरकारें। मैं राहुल गांधी को बहस की चुनौती देता हूँ, हम कहीं भी खुली चर्चा के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि श्री शाह ने कहा कि श्री रमण सिंह सरकार ने छत्तीसगढ़ में सबसे बड़ा काम नक्सलवाद पर नकेल कसकर राज्य को

विकास के पथ पर अग्रसर करने का काम किया है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी छत्तीसगढ़ में विकास करने वाले मुख्यमंत्री श्री रमण सिंह और विकास को गति देने वाले देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चुनाव लड़ने जा रही है। राहुल गांधी को चुनौती देते हुए उन्होंने कहा कि राहुल गांधी, हमने तो तय कर लिया कि हम छत्तीसगढ़ में किनके नेतृत्व में चुनाव लड़ने जा रहे हैं, लेकिन आप तो बताओ कि कांग्रेस किसके नेतृत्व में चुनाव लड़ने जा रही है। क्या कांग्रेस ऐसे लोगों के नेतृत्व में राज्य के चुनाव मैदान में है जो फर्जी सीडी बनाकर बांट रहे हैं और इस प्रकार की गंदी राजनीति कर रहे हैं। राहुल गांधी, क्या आप ऐसे लोगों को साथ लेकर राज्य में जनादेश मांगने के लिए निकले हैं? उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ की माताएं-बहनें कांग्रेस की गंदी राजनीति को करारा जवाब देगी। उन्होंने राज्य की मातृशक्ति का आह्वान करते हुए कहा कि आप मातृशक्ति को लज्जित करने वाली, अपमान करने वाली कांग्रेस पार्टी को छत्तीसगढ़ में केवल हराएं ही नहीं, बल्कि राज्य से कांग्रेस पार्टी को उखाड़ फेंकने का संकल्प लें ताकि फिर से इस तरह की गंदी राजनीति न पनप सके।

श्री शाह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी कांग्रेस की तरह गंदी चतुराई नहीं, चरित्र की लड़ाई लड़ती है और विकास की राजनीति करती है। उन्होंने कहा कि तेंदुपत्ता इकट्ठा करने वाले मजदूरों के मानांक को 400 रुपये से बढ़ाकर 2450 रुपये कर दिया गया है, इसके अतिरिक्त उन्हें लगभग अतिरिक्त बोनस के तौर पर प्रतिवर्ष 750 करोड़ रुपये आवंटित किये गए हैं, इस तरह पिछले 15 सालों में तेंदुपत्ता कर्मियों को लगभग

4000 करोड़ रुपये का बोनस दिया गया है। उन्होंने कहा कि हमने तो केवल तेंदुपत्ता के श्रमिकों के लिए 4000 करोड़ रुपये की राशि आवंटित की, कांग्रेस ने पूरे छत्तीसगढ़ के लिए भी इतने रुपये नहीं दिए। उन्होंने कहा कि 13 लाख से ज्यादा तेंदुपत्ता इकट्ठा करने वाले को चरण-पादुका प्रदान की गई है। उनके परिवार के बच्चों की पढ़ाई और छात्रवृत्ति की व्यवस्था की गई है। समर्थन मूल्य से फसलों में वन उत्पादों को खरीदने का काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में रमण सिंह सरकार धान पर न्यूनतम समर्थन मूल्य देने के साथ-साथ प्रति क्विंटल 300 रुपये बोनस के तौर पर अलग से दे रही है।

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि देश की आजादी के बाद से ही वनवासी बंधु वन अधिकार पत्र की मांग कर रहे थे, लेकिन कांग्रेस की केंद्र और राज्य सरकारों ने इसे अनसुना कर दिया। जब छत्तीसगढ़ की जनता के आशीर्वाद से राज्य श्री रमण सिंह सरकार आई तो भाजपा सरकार ने 3.68 लाख से ज्यादा वनवासी बंधुओं को लगभग 3.34 लाख हेक्टेयर भूमि का वन अधिकार पत्र प्रदान कर दिया है। उन्होंने कहा कि रमण सिंह जी ने राज्य में सातवां वेतनमान भी लागू किया है, जिससे राज्य के हजारों कर्मचारियों को फायदा मिल रहा है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी वनवासी बंधुओं के कल्याण के लिए कई कदम उठाये हैं। वन धन, जन धन और गोबर धन योजना की शुरुआत की गई है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी ने बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जी के जन्म जयंती के दिन छत्तीसगढ़ से ही इन योजनाओं की शुरुआत की थी। आज देश के 309 जिलों में आदिवासियों के कल्याण के लिए योजनायें चलाई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने खनिज कल्याण योजना, डिस्ट्रिक्ट मिनरल फंड और 65 विकास प्रकल्पों की शुरुआत की है। इतना ही नहीं, 115 पिछड़े और आदिवासी जिलों के लिए विकास की नई योजना बनाई गई

है, ताकि विकास में पिछड़े इन जिलों को मुख्यधारा में लाया जा सके। डिस्ट्रिक्ट मिनरल फंड के तहत आदिवासी भाइयों के कल्याण के लिए 18 हजार करोड़ रुपये की राशि उपलब्ध कराई गई है। उन्होंने कहा कि वनबंधु कल्याण योजना के तहत जनजाति ब्लॉक के लिए 10 करोड़ रुपये अतिरिक्त दिए गए हैं। 184 एकलव्य मॉडल स्कूलों की स्थापना कर वनवासी छात्रों के लिए शिक्षा के नए द्वार खोले गए हैं।

श्री शाह ने कहा कि मातृशक्ति ने दुनिया में भारतवर्ष के मान-सम्मान को बढ़ाने का कार्य किया है। केंद्र की मोदी सरकार और राज्य की रमण सिंह सरकार द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए किये गए कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि चाहे प्रधानमंत्री उज्वला योजना हो, बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण अभियान हो, गर्भवती महिलाओं को पोषण के लिए आर्थिक सहायता हो, सरस्वती साईकल योजना हो, बालिकाओं को निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराने की बात हो, हर क्षेत्र में केंद्र की मोदी सरकार एवं राज्य की रमण सिंह सरकार ने काफी अच्छा काम किया है। उन्होंने कहा कि रमण सिंह सरकार में शिशु मृत्यु दर 76 से घट कर 39 पर आ गई है, मातृ मृत्यु दर में भी काफी कमी आई है और साथ ही महिलाओं के टीकाकरण की दर भी 48 से बढ़कर 76 तक पहुंची है। उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी केन्द्रों की संख्या में वृद्धि और आंगनबाड़ी सहायिकाओं एवं आशा कार्यकर्ताओं के मानदेय में वृद्धि मोदी सरकार की महिलाओं के सशक्तिकरण के प्रति कटिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि गर्भवती माताओं को घर से अस्पताल और अस्पताल से घर तक पहुंचाने के लिए छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार ने टोल फ्री नम्बर 102 पर आधारित महतारी एक्सप्रेस की सुविधा उपलब्ध कराई गई है, जिससे लाखों माताओं को इसका लाभ मिल रहा है।

श्री शाह ने कहा कि आने वाले चुनाव में छत्तीसगढ़ की जनता के पास दो विकल्प हैं - एक तरफ सालों तक गरीबी हटाओ का नारा लगाकर गरीबों को हटाने वाली कांग्रेस तो दूसरी तरफ बिना कोई नारा दिए दिन-रात एक कर गरीबों, आदिवासियों, दलितों, पिछड़ों एवं महिलाओं के कल्याण के लिए काम करने वाली भारतीय जनता पार्टी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस नीति, नीयत और नेतृत्व विहीन पार्टी है, जिसका न तो कोई सिद्धांत है और न ही कोई विचारधारा। उन्होंने कहा कि श्री रमण सिंह 2025 तक श्रद्धेय अटल जी की कल्पना का नवा छत्तीसगढ़ का संकल्प लेकर लेकर निकले हैं। राज्य की जनता उन्हें चौथी बार अपना आशीर्वाद देकर भारी बहुमत से राज्य में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाने का मार्ग प्रशस्त करें। ■



विधानसभा चुनाव प्रभारियों की नियुक्ति

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने आगामी विधानसभा चुनावों के लिए केंद्रीय मंत्रियों सर्वश्री जगत प्रकाश नड्डा, प्रकाश जावडेकर और धर्मेन्द्र प्रधान को क्रमशः तेलंगाना, राजस्थान और मध्य प्रदेश का प्रभारी नियुक्त किया है। ■

‘फिर एक बार भाजपा, हर बूथ-कमल बूथ’

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 6 अक्टूबर को अजमेर, राजस्थान में गौरव यात्रा के समापन समारोह के अवसर पर आयोजित ऐतिहासिक विजय संकल्प सभा को संबोधित किया और विपक्ष की भी भूमिका निभाने में असफल रही कांग्रेस पार्टी की नकारात्मक राजनीति पर करारा प्रहार किया। ज्ञात हो कि मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने विगत चार अगस्त को राजसमंद से ‘गौरव यात्रा’ आरंभ की थी, जिसका समापन 6 अक्टूबर को अजमेर में हुआ।

श्री मोदी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी का हाईकमान राजस्थान की 7.5 करोड़ जनता है, जबकि कांग्रेस का हाईकमान सिर्फ एक परिवार है। उन्होंने कहा कि कांग्रेसियों की राजनीति तो एक परिवार की परिक्रमा और आरती करने से ही हो जाती है, यह उनके बस की बात नहीं कि वे राजस्थान के 7.5 करोड़ जनता की परिक्रमा कर पाएं। उन्होंने कहा कि एक परिवार की पूजा करने वालों से क्या कोई अपेक्षा की जा सकती है? उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी की सरकारें विकास के कामों के लिए तभी पैसा आवंटन करती हैं, जहां से उनकी वोट बैंक की राजनीति सधती है। इतना ही नहीं, वे बजट आवंटन में भी इसी तरह का खेल करते हैं। जहां वोट सुलभ हो, वहीं बजट देते हैं, इससे विकास के लिए आवंटित धनराशि गलत हाथों में चला जाता है। देश इसलिए बर्बाद हो रहा है। उन्होंने कहा कि बड़ी मुश्किल से 60 साल बाद देश ने एक दिशा पकड़ी है। उन्होंने जनता का आह्वान करते हुए कहा कि वोट बैंक की राजनीति करने वालों को हिंदुस्तान की राजनीति में घुसने मत दीजिए, हमें फिर से कांग्रेस पार्टी को मौका नहीं देना चाहिए।

प्रधानमंत्री ने कहा कि राजस्थान की भारतीय जनता पार्टी सरकार ने 13 लाख लोगों के घरों में बिजली पहुंचाने का काम किया है। यह बहुत आसान काम नहीं था। जिन घरों में अभी तक बिजली नहीं पहुंची है, राजस्थान सरकार वहां बिजली पहुंचाने का प्रयास कर रही है। फसलों के समर्थन मूल्य में वृद्धि के निर्णय की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हमने किसानों की भलाई के लिए फसल के समर्थन मूल्य को लागत मूल्य का डेढ़ गुना करने का वादा किया था और हमने इसे पूरा करके दिखाया। कांग्रेस पार्टी इस बात से परेशान है कि मोदी सरकार ने ये कर कैसे दिया। उन्होंने कहा कि केंद्र की भारतीय

जनता पार्टी सरकार के इस फैसले से हर साल किसानों को लगभग 62,000 करोड़ रुपये का अतिरिक्त फायदा होगा। प्रधानमंत्री आवास योजना पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि लोगों को घर तो पहले भी मिलते थे, लेकिन हम घरों में नल देते हैं, नल में जल देते हैं, बिजली देते हैं, हम टुकड़ों में काम नहीं करते। पहले की सरकारें टुकड़ों में करती थी, पहले जमीन का टुकड़ा देती थी, फिर एक चुनाव जीतती थी, फिर अगला काम करती, फिर दूसरा चुनाव जीतती, हम ऐसा नहीं करते, हम सभी कार्यों को जल्द से जल्द पूरा करने में विश्वास रखते हैं। उन्होंने कहा कि आने वाली जल योजना से जयपुर, दौसा, सवाई माधेपुर, कोटा, बूंदी, टोंक, अलवर, भरतपुर समेत 13 जिलों में रहने वाले 40 प्रतिशत लोगों को पीने के लिए मीठा पानी मिल सकेगा।

श्री मोदी ने कहा कि हमारी संवेदनशील सरकार ने कामकाजी



महिलाओं-बहनों को प्रसव के दौरान मिलने वाली छुट्टी बढ़ाकर 26 हफ्ते कर दी, जिससे बच्चे का लालन-पालन अच्छे से हो सके। उन्होंने कहा कि छोटे बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं का मिशन इन्द्रधनुष के माध्यम से टीकाकरण किया जा रहा है। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के माध्यम से गरीब महिलाओं को धुएं से मुक्त मिली है। शौचालय निर्माण के अभियान से उन्हें सम्मान के साथ जीने का अधिकार मिला है। तीन तलाक का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि मुस्लिम बहनों पर होने वाले अत्याचार से उन्हें मुक्ति दिलाने के लिए हमने तीन तलाक पर कानून लाने का काम किया।

अपने उद्बोधन के अंत में प्रधानमंत्री ने कहा कि राजस्थान ने प्रदेश में फिर से भारतीय जनता पार्टी की वसुंधरा सरकार बनाने का निर्णय कर लिया है। फिर एक बार भाजपा, हर बूथ कमल बूथ। ■

प्रधानमंत्री जन-आरोग्य योजना

राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय,
चाईबासा का शिलान्यास

राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय,
कोडरमा का शिलान्यास

10 हेल्थ एवं वेलनेस सेंटर
का शुभ-आरंभ

23 सितंबर, 2018

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, रांची, झारखंड



आयुष्मान भारत योजना का शुभारंभ योजना में कैंसर और हृदय रोग समेत 1300 बीमारियां शामिल

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 23 सितंबर को रांची, झारखंड में आयुष्मान भारत योजना यानी प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (पीएमजेएवाई) की शुरुआत की। पीएमजेएवाई का शुभारंभ करने से पहले प्रधानमंत्री ने इस योजना पर एक प्रदर्शनी का दौरा भी किया। इसी कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने चाईबासा और कोडरमा में मेडिकल कॉलेजों की आधारशिला की पट्टिका का अनावरण भी किया। उन्होंने 10 स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों का भी उद्घाटन किया।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री मोदी ने कहा कि इस योजना की शुरुआत गरीबों में गरीब और समाज के वंचित वर्गों को बेहतर स्वास्थ्य सेवा और उपचार प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया है। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत प्रति वर्ष प्रत्येक परिवार को 5 लाख रुपये के स्वास्थ्य बीमा की कल्पना की गई है, इससे 50 करोड़ से अधिक लोगों को फायदा होगा और यह दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना है। उन्होंने कहा कि इस योजना के लाभार्थियों की संख्या यूरोपीय संघ की आबादी के बराबर है,

या अमेरिका, कनाडा और मेक्सिको की संयुक्त जनसंख्या के करीब है।

उन्होंने कहा कि आयुष्मान भारत के पहले हिस्से- स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र- की शुरुआत बाबा साहेब अम्बेडकर की जयंती पर किया गया था और दूसरा भाग- स्वास्थ्य बीमा योजना-दीन दयाल उपाध्याय की जयंती से दो दिन पहले शुरू किया गया था।

प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना की व्यापकता के बारे में विस्तार से बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इसमें कैंसर और हृदय रोग जैसी गंभीर बीमारियों सहित 1300 बीमारियां शामिल होंगी। उन्होंने कहा कि निजी अस्पताल भी इस योजना का हिस्सा होंगे।

श्री मोदी ने कहा कि 5 लाख की राशि में सभी जांच, दवा, अस्पताल में भर्ती के खर्च आदि भी शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि इसके तहत यह पूर्व बीमारियों भी आएंगी। उन्होंने कहा कि लोग 14555 डायल करके या सेवा केंद्र के माध्यम से इस योजना के बारे में अधिक जान सकते हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि उन राज्यों के लिए जो

आयुष्मान भारत योजना की शुरुआत गरीबों में गरीब और समाज के वंचित वर्गों को बेहतर स्वास्थ्य सेवा और उपचार प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया है। इस योजना के तहत प्रति वर्ष प्रत्येक परिवार को 5 लाख रुपये के स्वास्थ्य बीमा की कल्पना की गई है, इससे 50 करोड़ से अधिक लोगों को फायदा होगा और यह दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना है।

पीएमजेवाई का हिस्सा हैं, लोग इन राज्यों में से किसी भी राज्य में जा रहे हैं, तो भी इस योजना का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि यह योजना एक गेम चेंजर की तरह है। उन्होंने विश्वास जताते हुए कहा कि आने वाले दिनों में दुनिया भर में मेडिकल क्षेत्र में काम करने वाले लोग, आरोग्य के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को, सोशल, अर्थशास्त्र आदि के विशेषज्ञों को भारत की इस योजना पर रिसर्च करना होगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि दुनिया की इतनी बड़ी योजना जिसकी कल्पना से लेकर कार्यान्वयन करने तक की यात्रा सिर्फ 6 महीने में पूरी की गयी। साथ ही 50 करोड़ लोगों को इसका लाभ मिले इसके लिए 13 हजार अस्पतालों को जोड़कर 6 महीने के भीतर इतनी बड़ी योजना आज धरती पर ले आना यह अपने आप में एक

बहुत बड़ा अजूबा है।

प्रधानमंत्री ने यहां उद्घाटन किए गए 10 स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि देश भर में ऐसे केंद्रों की संख्या 2300 तक पहुंच गई है। उन्होंने कहा कि उनका लक्ष्य आने वाले चार वर्षों के अंदर भारत में 1.5 लाख ऐसे केंद्र खोलना है।

उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार देश में स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार के लिए समग्र दृष्टिकोण के साथ काम कर रही है। उन्होंने कहा कि उनका ध्यान “वहनीय हेल्थकेयर” और “निवारक हेल्थकेयर” दोनों पर क्रेन्द्रित है। प्रधानमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि पीएमजेवाई से जुड़े सभी लोगों के प्रयासों और डॉक्टरों, नर्सों, स्वास्थ्य प्रदाताओं, आशा, एएनएम आदि के समर्पण के माध्यम से यह योजना सफल होगी। ■

ग्रामीण स्वच्छता सिर्फ चार वर्षों में 39 प्रतिशत से 95 प्रतिशत तक पहुंची 'स्वच्छ भारत मिशन' दुनिया का सबसे बड़ा जनांदोलन

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि महात्मा गांधी से प्रेरित होकर भारतीयों ने स्वच्छ भारत मिशन को दुनिया का सबसे बड़ा जन आंदोलन बना दिया है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण स्वच्छता, जो 2014 में 39 प्रतिशत थी, अब 95 प्रतिशत तक पहुंच गई है। प्रधानमंत्री ने कहा कि अब 5 लाख से ज्यादा गांव खुले में शौच (ओडीएफ) से मुक्त हैं। उन्होंने कहा कि भारत सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की ओर अग्रसर है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने यह बात 2 अक्टूबर को नई दिल्ली में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय स्वच्छता सम्मेलन (एमजीआईएससी) को संबोधित करते हुए कही।

अपने संबोधन में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने महात्मा गांधी द्वारा स्वच्छता पर दिए गए बल का उल्लेख किया। उन्होंने 1945 में प्रकाशित महात्मा गांधी के “रचनात्मक कार्यक्रम” का उल्लेख किया, जिसमें ग्रामीण स्वच्छता एक महत्वपूर्ण विषय थी। प्रधानमंत्री ने कहा कि अगर अशुद्ध वातावरण को साफ नहीं किया जाता है, तो ऐसी स्थिति को बढ़ावा मिलता है, जहां कोई भी व्यक्ति उन परिस्थितियों को स्वीकार करना शुरू कर देता है। इसके विपरीत, अगर कोई व्यक्ति अपने आसपास की गंदगी को साफ करता है, तो वह ऊर्जा प्राप्त करता है और वह स्वयं मौजूदा प्रतिकूल परिस्थितियों को स्वीकार नहीं करता है।

उन्होंने कहा कि यह महात्मा गांधी की प्रेरणा ही थी, जिसने स्वच्छ भारत मिशन को बढ़ावा दिया। उन्होंने दुनिया को स्वच्छ बनाने में “4 पी” – राजनीतिक नेतृत्व, सार्वजनिक निधि, साझेदारी और जनता की भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डाला।

गौरतलब है कि प्रधानमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र के महासचिव श्री अन्तोनिओ ग्युटेरेस के साथ एक डिजिटल प्रदर्शनी का भी दौरा किया।

मंच पर गणमान्य व्यक्तियों ने महात्मा गांधी/ पर स्मारक डाक टिकट और महात्मा गांधी के पसंदीदा भजन - “वैष्णव जन तो” पर आधारित एक सीडी जारी की। इस अवसर पर स्वच्छ भारत पुरस्कार भी प्रदान किए गए। ■

सितंबर 2018 में 94 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा का हुआ जीएसटी संग्रह

अगस्त 2018 की तुलना में सितंबर में जीएसटी संग्रह में वृद्धि

सितंबर 2018 में वस्तु एवं सेवा कर के रूप में कुल 94,442 करोड़ रुपए का राजस्व संग्रह हुआ। इसमें सीजीएसटी 15,318 करोड़ रुपए, एसजीएसटी 21,061 करोड़ रुपए, आईजीएसटी 50,070 करोड़ रुपए (आयात से प्राप्त 25,308 करोड़ रुपए सहित) और उपकर 7993 करोड़ रुपए (आयात से प्राप्त 3769 करोड़ रुपए सहित) रहा।

सितंबर 2018 में हुए सेटलमेंट के बाद केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा अर्जित कुल सीजीएसटी राजस्व 30,574 करोड़ रुपए और एसजीएसटी 35,015 करोड़ रुपए रहा। सितंबर 2018 में जहां कुल 94,442 करोड़ रुपए का जीएसटी संग्रह हुआ, वहीं अगस्त महीने यह 93,690 करोड़ रुपए था। इस लिहाज से सितंबर महीने में जीएसटी संग्रह में वृद्धि देखी गई।

अंजार (गुजरात) में एलएनजी टर्मिनल एवं पाइपलाइन परियोजनाओं का उद्घाटन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 30 सितंबर को अंजार-मुंद्रा परियोजना, मुंद्रा एलएनजी टर्मिनल और अंजार में पालनपुर-पाली-बाड़मेर पाइपलाइन परियोजना का उद्घाटन किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि कच्छ में उन्हें जो प्रेम मिला, वह अद्वितीय है। उन्होंने पिछले 20 वर्षों में कच्छ में किए गए विकास कार्यों की सराहना की।

उन्होंने कहा कि तीन एलएनजी टर्मिनलों का उद्घाटन करके मैं अपने को बहुत सौभाग्यशाली महसूस करता हूँ। श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि जब गुजरात ने अपना पहला एलएनजी टर्मिनल प्राप्त किया था तो लोगों को आश्चर्य हुआ था। उन्होंने कहा कि अब राज्य को निश्चित रूप से चौथा एलएनजी टर्मिनल भी प्राप्त होने वाला है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि गुजरात अब भारत के एलएनजी हब के रूप में उभर रहा है और इससे प्रत्येक गुजरातवासियों को गर्व महसूस करना चाहिए। उन्होंने जोर देकर कहा कि एक मजबूत ऊर्जा क्षेत्र किसी भी देश के विकास के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि अगर हम ऊर्जा के लिहाज से निर्धन रहेंगे, तो हम गरीबी का उन्मूलन नहीं कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि लोगों की आकांक्षाएं बढ़ रही हैं और वे पारंपरिक बुनियादी ढांचे के अतिरिक्त आई-वेज, गैस ग्रिड, वॉटर ग्रिड एवं ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क चाहते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि पर्यटन क्षेत्र में प्रचुर संभावनाएं हैं और दुनिया भारत आने के



लिए इच्छुक है। उन्होंने कहा कि हमने कच्छ में भी देखा है कि किस प्रकार व्हाइट रण दुनिया भर के लोगों की आंखों का केंद्र बन गया है। उन्होंने केंद्र सरकार द्वारा उड्डयन क्षेत्र को अधिक किफायती बनाने एवं कनेक्टिविटी में सुधार लाने के लिए उठाए गए कदमों की भी चर्चा की।

प्रधानमंत्री ने उन प्रयासों की भी चर्चा की जो यह सुनिश्चित करने के लिए किए गए थे कि सभी गांवों में बिजली आ जाए और उन कदमों का भी उल्लेख किया जो भारत के प्रत्येक परिवार को विद्युतीकृत करने के लिए उठाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम भारत के आम लोगों के जीवन में गुणात्मक बदलाव लाना चाहते हैं। ■

आणंद में आधुनिक खाद्य प्रसंस्करण सुविधा केंद्रों का शुभारंभ

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 30 सितंबर को आणंद में अमूल के अत्याधुनिक चॉकलेट संयंत्र सहित आधुनिक खाद्य प्रसंस्करण सुविधा केंद्रों का उद्घाटन किया। उन्होंने चॉकलेट संयंत्र का अवलोकन किया एवं वहां उन्हें उपयोग में लाई जा रही विभिन्न प्रौद्योगिकियों एवं बनाये जा रहे विभिन्न उत्पादों के बारे में जानकारी दी गई। इस अवसर पर उन्होंने आणंद के लोगों को इतनी बढ़ी संख्या में उपस्थित होने पर धन्यवाद दिया।

उन्होंने कहा कि आज जिन परियोजनाओं का उद्घाटन किया जा रहा है, वे सहकारी संघ के लिए बहुत शुभ हैं। उन्होंने कहा कि अमूल के ब्रांड को दुनिया भर में जाना जाता है और यह दुनिया भर में प्रेरणा का एक स्रोत बन गया है। उन्होंने कहा कि अमूल का संबंध न केवल दुग्ध प्रसंस्करण से है, बल्कि यह अधिकारिता का भी एक शानदार मॉडल है।

उन्होंने कहा कि सहकारी संघों के जरिये सरदार पटेल ने एक ऐसा रास्ता दिखाया, जिसमें न तो किसी सरकार और न ही किसी उद्योगपति का ही कोई अधिकार है। उन्होंने कहा कि यह एक अनोखा मॉडल है जहां लोग ही मायने रखते हैं। उन्होंने कहा कि गुजरात में सहकारी क्षेत्र में किए गए प्रयासों ने लोगों की, खासकर किसानों की सहायता की है। उन्होंने शहरी विकास पर सरदार पटेल द्वारा बल दिए जाने का भी स्मरण किया।

प्रधानमंत्री ने 2022 में भारत की आजादी के 75वीं वर्षगांठ का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत दुग्ध क्षेत्र में बढ़िया प्रदर्शन कर रहा है, लेकिन वह और भी अच्छा कर सकता है। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि नवोन्मेषण एवं मूल्य संवर्द्धन को महत्व दिया जाए। इस संदर्भ में उन्होंने शहद के उत्पादन की भी चर्चा की। ■

सांस्कृतिक अधिष्ठान

भारतीय जनसंघ के पूर्व अध्यक्ष एवं एकात्म मानववाद के प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा 4 जून, 1959 को कानपुर में संपन्न संघ शिक्षा वर्ग में दिए गए बौद्धिक का संपादित प्रथम भाग:



दीनदयाल उपाध्याय

एक साधारण सा विचार हम लोगों के सामने आता है कि हमारी संस्कृति संपूर्ण मानव की संस्कृति या मानव की एकता से, कहां तक मेल खा सकती है। क्या ऐसा नहीं है कि इस प्रकार से हम अपनी संस्कृति के ऊपर बल देकर दूसरे लोगों के लिए किसी एक प्रकार का संकट उत्पन्न कर दें या जिस प्रकार से अपनी-अपनी संस्कृति के ऊपर बाक्री के लोगों ने जो बल दिया है, उस बल के परिणामस्वरूप संसार में जो भिन्न-भिन्न युद्ध हुए, उसी प्रकार हम भी किसी एक भावी युद्ध की नींव रख दें। इस प्रकार का भय बहुत से लोगों के मन में आता है और इस भय का बहुत बड़ा कारण शायद यह है कि पिछली लड़ाई में हिटलर ने जिस एक सिद्धांत के ऊपर खड़े होकर संपूर्ण जर्मन राष्ट्र को संगठित किया और जिसका परिणाम अंत में विश्वयुद्ध हुआ। उसमें किसी प्रकार से जर्मनी की जो एक विशिष्ट संस्कृति थी, जर्मनी की जो एक विशुद्ध राष्ट्र की भावना थी, जर्मनी की जो एक विशुद्ध महत्वाकांक्षा थी, उसका आधार लेकर वह खड़ा हुआ था।

अंग्रेजी में यह कल्चर शब्द भी लैटिन के 'कुल्टुर' शब्द से आया हुआ है। इसीलिए लोगों को साधारणतया ऐसा लगता है कि यदि किसी राष्ट्र की संस्कृति पर बल दिया गया तो उसका परिणाम सारी दुनिया के लिए वह घातक सिद्ध हो सकता है। किंतु यह पूर्ण सत्य नहीं कहा जा सकता। कोई भी एक

व्यक्ति, जो संस्कृति का नाम लेकर कोई एक गलत बात कर ले, ऐसी ही बहुत सी चीजों का नाम लेकर दुनिया में जो कोई खराब काम करने वाले हैं, यदि वे कोई खराब काम करते हैं, क्या इसके कारण हम उन अच्छी-अच्छी चीजों को छोड़ दें? तो इसका थोड़ा सा विचार करने की आवश्यकता है कि हम इस अच्छे भाव को छोड़कर चलें क्यों?

इसका विचार हमें दो आधारों पर करना पड़ेगा। पहला आधार तो यह है कि क्या दूसरे लोगों ने इन चीजों का दुरुपयोग किया है? तो क्या हम उसी आधार पर इसे छोड़ दें? दूसरा, यानी हम छोड़ना भी चाहें, तो छोड़ सकते हैं क्या? यह शायद दूसरा भी विचार ऐसा है कि जिस पर हमें विचार करने की आवश्यकता है। अब तीर्थों में बहुत से लोग हैं, वहां सब प्रकार की बुराइयों के अड्डे भी हैं। केवल इसी कारण वहां नहीं जाना चाहिए, ऐसा कोई निर्णय

वहां की ये चारों बुराइयां ही देखे और काशी जाने का विचार त्याग दे, तो शायद यह ठीक नहीं होगा। वह काशी का लाभ उठाने से वंचित हो जाएगा। यदि देखा जाए तो दुनिया में ऐसी अच्छी चीज कुछ भी नहीं है, जिसका दुरुपयोग करनेवाले इस दुनिया में न हों।

राष्ट्रीयता का दुरुपयोग करनेवाले लोग इस दुनिया में पैदा हो गए। धर्म के नाम पर दुनिया में बड़ी-बड़ी लड़ाइयां हुईं। आज तो साइंस सबका देवता बना है। यहां विज्ञान के नाम पर क्या हो रहा है? यह तो हम देखते चले जा रहे हैं। आज इसी विज्ञान ने हाइड्रोजन बम बनाया है। अब क्योंकि विज्ञान ने बहुत सी घातक चीजों का भी आविष्कार किया है, तो क्या हम इन चीजों को छोड़ दें, विज्ञान को छोड़ दें? तो इस प्रकार कोई न कोई चीज किसी हित के लिए बनाई जाती है, तो वह कोई न कोई नुकसान भी करेगी। इसी प्रकार जर्मनी ने यह काम किया भी तो दूसरे लोग भी इस प्रकार का काम करेंगे। तीसरे लोग भी इस प्रकार का काम करेंगे, बाक्री के राष्ट्र भी करेंगे। इसीलिए अपने को यह नहीं करना चाहिए-ऐसा सोचकर चलना बिल्कुल गलत चीज है।

वास्तविकता यह है कि जब हम विचार करते हैं कि संस्कृति के अंदर कोई विशेषता है। संस्कृति के अंदर कोई अच्छी वस्तु है तो हमें उसकी आराधना करनी पड़ेगी, उसके ऊपर खड़ा होना पड़ेगा और जैसा कि हमने अभी तक विचार किया, हमने यह देखा कि संस्कृति वहीं से प्रारंभ होती है, जब व्यक्ति अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर परार्थ भाव से अपने जीवन का निर्माण करता है, जीवन की क्रियाओं का निर्धारण करता है। जहां स्वार्थ आ जाता है, वहां किसी प्रकार की संस्कृति नहीं आती और यदि किसी स्वार्थी व्यक्ति के

संस्कृति के अंदर कोई अच्छी वस्तु है तो हमें उसकी आराधना करनी पड़ेगी, उसके ऊपर खड़ा होना पड़ेगा और जैसा कि हमने अभी तक विचार किया, हमने यह देखा कि संस्कृति वहीं से प्रारंभ होती है, जब व्यक्ति अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर परार्थ भाव से अपने जीवन का निर्माण करता है, जीवन की क्रियाओं का निर्धारण करता है।

कर ले। काशी के बारे में एक कहावत है कि 'रांड, सांड, सीढ़ी, संन्यासी-इनसे बचे सो सेवे काशी।' यानी ये जो चारों चीजें हैं, इनसे व्यक्ति अगर बच गया तो समझो काशी का लाभ उठा सकता है। वहां रहकर जीवन भी भलीभांति व्यतीत कर सकता है। लेकिन यदि कोई व्यक्ति

राष्ट्र की भावना का दुरुपयोग किया है, तो वह संस्कृति के लिए दोषारोपण की चीज नहीं, यह स्वार्थ है जो कि संस्कृति का अंग बनता ही नहीं। संस्कृति कभी विश्व के लिए घातक नहीं होती। वास्तविकता यह है कि संस्कृति सदैव दूसरे के लिए योजक होती है। एक व्यक्ति के जीवन में जब सांस्कृतिक भाव आता है, तो वह दूसरे के साथ मिलकर एकरूप होकर, दूसरे के मेल का विचार करता है। वैसे ही जब राष्ट्र भी संस्कृति के आधार पर जाग्रत् होता है, जब राष्ट्र सांस्कृतिक अधिष्ठान पर खड़ा हो जाता है। जब राष्ट्र संस्कृति को अपने जीवन में लेकर और अधिकाधिक अपनी संस्कृति के ऊपर अपनी संपूर्ण नीतियों का निर्धारण करता है, उसमें एक राष्ट्र दूसरे के लिए सहायक होता है। सदैव लाभकारी ही होता है।

वह कभी हानि नहीं पहुंचाता। हमने अपने जीवन में बड़े-बड़े साम्राज्य भी देखे हैं। हमारे पास शक्ति भी थी। शस्त्र-बल भी था। परंतु हमने सब बल होते हुए भी अपने जीवन में सांस्कृतिक अधिष्ठान के कारण चढ़ाइयां नहीं कीं। सिकंदर के समान जो यहां से विश्व-विजय की कामना लेकर चला, हम अपने संपूर्ण इतिहास में देखते हैं तो यह पता नहीं चलता कि कोई (केवल लड़ाई में जीतने के लिए) सिकंदर के समान हमारे यहां से निकलकर गया। हमारे सामने वह इतिहास नहीं कि जिसमें ऐसा लिखा हो। हमारे यहां से लोग गए, दुनिया में दूर-दूर स्थानों पर जाकर उन्होंने शिक्षा दी, उन्हें ज्ञान का मार्ग बताया, संस्कृति के बारे में सिखाया व उसकी विशेषताओं को बताया। परंतु हमारे यहां से हाथ में परम पवित्र भगवा ध्वज को लेकर बड़े-बड़े सेनानी दूर-दूर विदेशों में भारत की सीमाओं को लांघकर विजय पाने के लिए नहीं गए। भगवा ध्वज को हाथ में लेकर भारत के संन्यासी और साधु, संत और महर्षि दुर्लभ्य घाटियों को लांघकर अथाह समुद्र को पार करके दूर-दूर देशों में जाकर वहां के लोगों के साथ वहां के जीवन के साथ एकरूप हो गए और उनको भी इस संपूर्ण संस्कृति का ज्ञान दिया।

साधारणतया जो मानव प्रकृति है, वह उसका पशु-जीवन है। उस पशु-जीवन से ऊपर उठाकर उसे मानव के सहारे जीवित रहना सिखाते और मानव से उसे देवता बनाने का प्रयास करते चले गए। यह प्रयत्न हमारे महापुरुषों ने अवश्य किया है। हमारे सामने यह उदाहरण है और जब यह उदाहरण सामने है तो किसी को चिंता करने की आवश्यकता नहीं कि हम अपनी संस्कृति के बल पर खड़े हो जाएंगे तो क्या होगा?

दूसरा भी हमारे सामने एक विचार आता है। जीवन की जो वास्तविकताएं हैं और व्यावहारिकताएं हैं, जिनके आधार पर हम खड़े

दुनिया में मानव की एकता एक अच्छा नारा है। यह एकता एक अच्छा सपना भी है, जिसका बहुत सुंदर आदर्श भी हो सकता है। किंतु विचार करें, मानव की एकता का अर्थ क्या है? उसका आधार दूढ़े तो पता लगेगा कि दुनिया ने इस एकता का नारा लगाया, परंतु मानवता के आधार का कभी विचार नहीं किया। उन्होंने तो ऊपर-ऊपर से सारी चीजें लेकर कहा कि मानव को एक हो जाना चाहिए। कोशिशें भी भिन्न-भिन्न कीं। बाहरी एकता, केवल इसी का विचार किया।

हैं। दुनिया में मानव की एकता एक अच्छा नारा है। यह एकता एक अच्छा सपना भी है, जिसका बहुत सुंदर आदर्श भी हो सकता है। किंतु विचार करें, मानव की एकता का अर्थ क्या है? उसका आधार दूढ़े तो पता लगेगा कि दुनिया ने इस एकता का नारा लगाया, परंतु मानवता के आधार का कभी विचार नहीं किया। उन्होंने तो ऊपर-ऊपर से सारी चीजें लेकर कहा कि मानव को एक हो जाना चाहिए। कोशिशें भी भिन्न-भिन्न कीं। बाहरी एकता, केवल इसी का विचार किया। लोगों ने सोचा कि मानव को हम एक कर लेंगे, अर्थात् सारी दुनिया के मानव एक ही समय पर भोजन करने आ जाएं तो सारी दुनिया के मानव केवल काबा की तरफ मुंह

करके नमाज पढ़ने लगेंगे। सारी दुनिया के लोग स्वीकार करें तो सारी दुनिया का मानव एक हो जाएगा। परंतु जरा हम सोचें कि सारी दुनिया के मानव को एक बनाना कैसे होगा, यह कैसे हो सकता है?

सच तो यह है कि एकता हमें प्राप्त हो सकती है। एकता जो मानव के अंदर की शक्ति है, उस शक्ति का आधार लेकर मानव के अंदर जो एक सत्ता छिपी है, उसका विचार करें। उसका विचार कर उसके अंदर व्याप्त होने वाली एक ज्वलंत चेतनमयी शक्ति लेकर जब हम चलते हैं, तभी शायद मानव की एकता का विचार कर सकते हैं। मानव के आगे जो सृष्टि दिखाई देती है, उस सृष्टि का, जिसका वह उपयोग करता है, हमने विचार किया है। यह मानव की एकता एक स्वार्थमयी भावना से पैदा नहीं हुई है, जिसमें मानव दुनिया का संपूर्ण उपभोग करने के लिए पैदा हुआ है। मनुष्य भोक्ता है, बाक्री की सारी सृष्टि उपभोग की वस्तु है-ऐसा विचार आ जाएगा। मानव इसको अपने सुखों के लिए उपयोग करता है। इसलिए संपूर्ण सृष्टि को स्वार्थ व उपभोग के लिए माना जाए-ऐसा विचार करनेवाली पश्चिमी सभ्यता की ही दृष्टि है।

उनकी अधिकाधिक व्यापक दृष्टि केवल यहां तक आकर पहुंची कि हम मानव की एकता का विचार करें, सब चीजों का उपभोग करें। इसीलिए उन्होंने सोचा, खाते चलो। अर्थात् जो फल है, उसे खाओ, बाक्री की सारी चीजों को खाओ, पशु-पक्षी जो दिखाई देते हैं, उन सभी को खाओ। दुनिया में न खाने वाला कुछ भी नहीं। एक सज्जन तो यहां तक कह रहे थे कि दो पैरों वाले आदमी और चार पैर वालों में चारपाई छोड़कर और सब कुछ खा सकते हैं। इस प्रकार से दो पैर वाले आदमी को ही क्यों छोड़ें? चारपाई तो शायद खाई नहीं जा सकती, इसलिए छोड़ा। सबको खाने की यह जो भावना दिखाई पड़ी है, यह मनुष्य की भोगमयी, स्वार्थमयी प्रवृत्ति है। इसके आगे भी तो विचार किया जा सकता है। ■

क्रमशः...

जननेता भैरोंसिंह शेखावत

(23 अक्टूबर 1923 – 15 मई 2010)

भै

रोंसिंह शेखावत भारत के ग्यारहवें उपराष्ट्रपति और राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री थे। वे राजस्थान के राजनीतिक क्षितिज पर काफ़ी लम्बे समय तक छाये रहे। राजस्थान की राजनीति में उनका जबर्दस्त प्रभाव था। उनके कार्यकर्ताओं ने उन पर एक जोरदार नारा भी दिया, जो इस प्रकार था- “राजस्थान का एक ही सिंह, भैरोंसिंह...भैरोंसिंह। यह नारा बहुत लंबे समय तक गूंजता रहा था। भैरोंसिंह शेखावत 1952 में विधायक बने। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा और सफलताएं अर्जित करते हुए विपक्ष के नेता, फिर मुख्यमंत्री और उपराष्ट्रपति बने।

भैरोंसिंह शेखावत का जन्म 23 अक्टूबर 1923 को सीकर (राजस्थान) में हुआ। इनके पिता का नाम देवीसिंह और माता बन्ने कंवर थीं। भैरोंसिंह शेखावत ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा गांव की पाठशाला में ही प्राप्त की। हाईस्कूल करने के पश्चात् उन्होंने जयपुर के ‘महाराजा कॉलेज’ में दाखिला ले लिया। उन्होंने पुलिस की नौकरी भी की, लेकिन उसमें मन नहीं रमा और त्यागपत्र देकर वापस



खेती करने लगे।

भैरोंसिंह शेखावत जनसंघ के संस्थापक काल से ही जुड़ गये और ‘जनता पार्टी’ तथा ‘भाजपा’ की स्थापना में भी उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। वर्ष 1952 में वे दस रुपये उधार लेकर दाता रामगढ़ से चुनाव के लिए खड़े हुए। इस समय उनका चुनाव चिह्न ‘दीपक’ था। इस चुनाव में उन्हें सफलता मिली और वे विजयी हुए। इस सफलता के बाद उनका राजनीतिक सफर लगातार चलता रहा। वे दस बार विधायक, 1974 से 1977 तक राज्य सभा के सदस्य रहे। अपने लम्बे राजनीतिक सफर में भैरोंसिंह शेखावत 1977 से 1980, 1990 से 1992 और 1993 से 1998 तक राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे और 2002 में भारत के उपराष्ट्रपति बने। भैरोंसिंह शेखावत का निधन 15 मई 2010 को हुआ। आजीवन राष्ट्रहित में काम करने वाले जननेता शेखावत जी गरीबों के सच्चे सहायक थे। उन्होंने कहा कि मैं गरीबों और वंचित तबके के लिए काम करता रहूंगा, ताकि वे अपने मौलिक अधिकारों का गरिमापूर्ण तरीके से इस्तेमाल कर सकें। ■

प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक के. आर. मलकानी

(19 नवम्बर 1921– 27 अक्टूबर 2003)

के

वलराम रतनमल मलकानी (के. आर. मलकानी) एक प्रखर चिंतक, राजनेता, आदर्शवादी, सैद्धांतिक पत्रकार व कर्मयोगी थे। वे भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष एवं पांडीचेरी के राज्यपाल रहे। वह एक समर्थ विचारक एवं लेखक भी थे। मलकानी जी का जन्म 19 नवंबर, 1921 को हैदराबाद (सिन्ध) में हुआ था। युवाकाल में ही वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल हो गए और 1941 से 2003 तक वे आजीवन संघ के निष्ठावान स्वयंसेवक रहे। मलकानी जी राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार पत्र ‘ऑर्गेनाइजर’ के संपादक थे। उनके ही आग्रह पर पं. दीनदयाल उपाध्याय ने ऑर्गेनाइजर में साप्ताहिक ‘पालिटिकल डायरी’ लिखना प्रारंभ किया।

मलकानी जी निर्भीक व निःस्वार्थी थे। उनका जीवन बहुत सादा और कठिन था। 1971 में ‘मदरलैंड’ नामक दैनिक पत्र प्रारंभ हुआ। मदरलैंड के संपादन का जिम्मा व प्रबंधन मलकानी जी पर था। आपातकाल की घोषणा के बाद मलकानी जी पकड़े गए और पूरे उन्नीस महीने जेल काटकर आपातकाल समाप्त होने पर छोड़े गए। उनके जेल जीवन की कहानी उनकी कलम से ‘मिडनाईट नॉक’ नामक पुस्तक के



रूप में सामने आयी। ‘मदरलैंड’ बंद होने के बाद मलकानी जी पुनः ऑर्गेनाइजर के संपादक पद पर वापस आये और 1982 में 62 वर्ष की आयु में ऑर्गेनाइजर के संपादक दायित्व से निवृत्त हुए। मलकानी जी ने भाजपा के मुखपत्र ‘बीजेपी टुडे’ का भी संपादन किया।

मलकानी जी भारतीय जनता पार्टी की केन्द्रीय कार्यसमिति में आमंत्रित रहते थे। जब उन्हें उपाध्यक्ष पद सौंपा गया तब उन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान के गैर-राजनीतिक चरित्र का आदर करते हुए उसके दायित्वों से मुक्ति ले ली और वे उपाध्यक्ष के नाते भाजपा के केन्द्रीय कार्यालय में पूरे समय बैठने लगे। 1994 से 2000 तक वे राज्यसभा के सदस्य रहे, पर उनकी कलम कभी रुकी नहीं।

मलकानी जी आजन्म योद्धा रहे। संपादक के पत्र स्तंभ हो, या टेलीविजन पर बहस, हर जगह मलकानी जी का राष्ट्रवादी स्वर गूंजता रहा। वे जुलाई 2002 में पांडिचेरी के उपराज्यपाल पद पर नियुक्त हुए। 27 अक्टूबर 2003 को उन्होंने अंतिम सांस ली। मलकानी जी का जीवन आदर्शवादी, सिद्धान्तनिष्ठ पत्रकारिता के लिए प्रकाशस्तंभ है, प्रेरणास्रोत है। ■

हम जन-जन तक पहुंचा रहे हैं केंद्र सरकार की उपलब्धियां: नित्यानंद राय

बिहार भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष एवं उजियारपुर लोकसभा क्षेत्र के सांसद श्री नित्यानंद राय एक ऊर्जावान, कर्मठ और जुझारू नेता हैं। 2014 में लोक सभा में चुने जाने से पहले ये 2000 से हाजीपुर विधानसभा क्षेत्र का लगातार प्रतिनिधित्व करते आ रहे थे। 'कमल संदेश' के एसोसिएट एडिटर विकास आनन्द ने पटना स्थित प्रदेश मुख्यालय में 2 अक्टूबर को श्री नित्यानंद राय से संगठन की गतिविधियों, आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर तैयारी जैसे मुद्दों पर विस्तार से बातचीत की। प्रस्तुत है मुख्यांश:

आ ज श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राजग गठबंधन मजबूत हुआ है। राजग में दलों की संख्या बढ़ी है। बिहार में राजग की स्थिति कैसी है?

निश्चित तौर पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए राष्ट्रव्यापी तौर पर मजबूत हुआ है। राजग पहले से काफी मजबूत हुआ है। बिहार में गठबंधन मन से है, दिल से है और परस्पर सहयोग के साथ चल रहा है। विकास युक्त एवं भ्रष्टाचार मुक्त नीति पर बिहार में एनडीए की सरकार प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के "सबका साथ-सबका विकास" के सपने को जमीनी धरातल पर साकार करने में लगी है। वास्तव में यह भाजपा का स्वर्णिम काल है। हमारे तीन प्रमुख वैचारिक आदर्श एवं प्रेरणास्रोत दीनदयाल उपाध्याय जी, श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी और अटल बिहारी वाजपेयी जी हैं। पार्टी को इस ऐतिहासिक मुकाम पर पहुंचाने का श्रेय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह को जाता है जिनके कुशल नेतृत्व में भाजपा ने लगातार सफलताएं अर्जित की हैं। हमने 4-5 राज्यों से सफ़र शुरुआत की थी आज 19 राज्यों में सरकारें हैं तथा भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी बन गयी है। यही नहीं, हमारे गठबंधन सहयोगियों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है। यह भाजपा की जन-जन में बढ़ती स्वीकार्यता एवं लोकप्रियता से ही संभव है।

लोकसभा चुनाव की दृष्टि से संगठन की तैयारी कहां तक पूरी हो चुकी है?

बिहार भाजपा हमेशा तैयार ही रहती है। सेना के सिपाही की तरह हम एलर्ट मोड में रहते हैं। संगठन बूथ स्तर पर टीम गठित करने के साथ शक्ति केन्द्रों के गठन कर प्रभारी बनाने में सौ फीसदी सफल है, लेकिन इसे और मजबूत करने का काम चलता रहता है। संगठन का रिव्यू सिस्टम है जिससे असेसमेंट भी लगातार चलता रहता है। किसी भी स्तर पर कार्यकर्ता कार्य में कोताही नहीं करते और सौ फीसदी योगदान देकर



पार्टी को मजबूत करने में दिन-रात लगे रहते हैं। चुनाव हमारे लिए चुनौती इसलिए नहीं है क्योंकि हम पूरे साल संगठन के काम में लगे होते हैं। यह बात जान लीजिये कि बिहार भाजपा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह के समक्ष यह संकल्प लिया है कि सभी 40 सीटें एनडीए की झोली में जाएगी और हम श्री नरेंद्र मोदी जी को एक बार फिर भारत का प्रधानमंत्री बनाकर ही दम लेंगे।

केंद्र की राजग सरकार की उपलब्धियों को जनता के बीच ले जाने को लेकर संगठन क्या कर रहा है?

प्रदेश संगठन में ऊपर से नीचे तक के समस्त पदाधिकारी, नेतागण एवं कार्यकर्ता इन दिनों संवाद एवं प्रवास में लगे हैं। शक्ति केन्द्रों पर प्रवास कर बूथ को मजबूत करना और वहां मौजूद लोगों के बीच केन्द्रीय योजनाओं के कार्यान्वयन को पुख्ता करना। इसी कड़ी में जरूरतमंद से मुलाकात-संवाद कर, नीतियों के बारे में जनता को जागरूक बनाकर जमीनी स्तर पर केंद्र की नीतियों को जन-जन के बीच पहुंचाया जा रहा है। माननीय नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व की एनडीए सरकार की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचा रहे हैं। इसके अलावा मूल संगठन एवं उसके मोर्चा-प्रकोष्ठों के द्वारा जिला-मंडल स्तर पर आयोजित कार्यक्रमों के माध्यम से भी श्री नरेन्द्र मोदी की सरकार की नीतियों का प्रचार-प्रसार संगठन के स्तर से किया जा रहा है।

पिछले 27 सालों से ओबीसी कमीशन को संवैधानिक दर्जा नहीं दिए जाने के लिए कांग्रेस-राजद एवं उनके सहयोगी दल जिम्मेदार थे जो एक प्रकार की साजिश से कम नहीं है। यह कितने आश्चर्य की बात है कि एक ऐसा आयोग जो संविधान के प्रावधानों की बुनियाद पर बना हो, उसको ही आज तक संवैधानिक दर्जा नहीं प्राप्त नहीं था। लेकिन आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पिछड़ों के हित में मनोभावना का ही परिणाम है कि उन्होंने पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा दिला दिया।

पिछले 27 सालों से ओबीसी कमीशन को संवैधानिक दर्जा नहीं दिए जाने के लिए कांग्रेस-राजद एवं उनके सहयोगी दल जिम्मेदार थे जो एक प्रकार की साजिश से कम नहीं है। यह कितने आश्चर्य की बात है कि एक ऐसा आयोग जो संविधान के प्रावधानों की बुनियाद पर बना हो, उसको ही आज तक संवैधानिक दर्जा नहीं प्राप्त नहीं था। लेकिन आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पिछड़ों के हित में मनोभावना का ही परिणाम है कि उन्होंने पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा दिला दिया। पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा दिलाने के लिए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह भी बहुत बधाई के पात्र हैं। देश की 54% पिछड़ा-अति पिछड़ा आबादी संवैधानिक दर्जा दिलाने के लिए प्रधानमंत्री जी एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष जी को साधुवाद दे रही है।

बिहार भाजपा के प्रशिक्षण की तैयारी पूरी हो गयी है। अभी वर्तमान स्थिति क्या है?

बिहार भाजपा का प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा हो चुका है, लेकिन हम लगातार प्रशिक्षण के बाद भी अपने संगठन के लोगों से विभिन्न स्तरों पर संवाद में लगे हैं, ताकि संगठन का काम प्रदेश से लेकर बूथ तक उत्कृष्टता के मानदंड पर स्थापित मानकों पर खरा उतर सके।

15 सितम्बर को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बिहार की जनता से स्वच्छता को लेकर संवाद किया था। आज 2 अक्टूबर को गांधी जयंती है। स्वच्छ भारत मिशन के बिहार में सफलता को लेकर क्या कहेंगे। बिहार भाजपा इस मिशन को कैसे सफल बना रही है?

बिहार में स्वच्छता को जन जागरूकता का मुद्दा बनाया गया है। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छता को हर घर और हर जन के दिलो-दिमाग में एक मुद्दा बना दिया जिसको लेकर समस्त भारतवासी जरूर सोचने लगे हैं। हमारे देश की बहन-बेटियों-माताओं के लिए हर घर शौचालय की बात को उन्होंने जितनी गंभीरता से उठाया पहले कभी नहीं हुआ। स्वच्छता और शौचालय का मुद्दा हमारे मान-सम्मान का मुद्दा बनता जा रहा है। बिहार में यह एक सफल कार्यक्रम है।

ओबीसी कमीशन को श्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने संवैधानिक दर्जा दिया। पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा देने के कदम को किस रूप में देखते हैं?

पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया गया। यह पिछड़ों के हित में किस प्रकार लाभकारी कदम है?

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा मिलने के बाद देश के पिछड़ों को इस प्रकार का निम्नलिखित लाभ मिलेगा:

- मौजूदा पिछड़ा वर्ग आयोग एक साधारण कानूनी निकाय है, जिसका कार्य सरकार को जातियों/समुदायों की सूचियों में शामिल करने अथवा निकालने के संबंध में सलाह देना भर है लेकिन इसको संवैधानिक दर्जा देने के बाद इसे अनुसूचित जाति आयोग एवं अनुसूचित जनजाति आयोग के बराबर का दर्जा मिल जायेगा।
- संवैधानिक दर्जा मिलने के बाद यह आयोग पिछड़ा वर्ग के संरक्षण, कल्याण और विकास तथा उन्नति से संबंधित अन्य कार्यों का भी निर्वहन करेगा।
- संवैधानिक दर्जा मिलने के बाद यह आयोग संविधान के अंतर्गत आने वाले अनुच्छेद 16(4) एवं 15(4) के निहित अधिकारों का प्रयोग करते हुए सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों को सशक्त करते हुए उनको न्याय देगा।
- ओबीसी के उत्थान को लेकर बनने वाली सरकार की योजनाओं में आयोग की भूमिका सलाहकार की नहीं होगी। योजनाओं में आयोग की भागीदारी भी होगी।
- संवैधानिक दर्जा मिलने के बाद ओबीसी आयोग को संवैधानिक दर्जा दिए जाने के बाद इसके तहत पिछड़ी जातियों की समस्याओं का निपटारा किया जा सकेगा। आयोग ओबीसी सूची में शामिल जातियों की समस्याओं को सुन सकेगा और उनका समाधान कर सकेगा। ■

मानव सशक्तीकरण के लिए स्वच्छ पर्यावरण



नरेन्द्र मोदी

सं युक्त राष्ट्र ने मुझे 'चैम्पियंस ऑफ द अर्थ अवॉर्ड' से सम्मानित किया। यह सम्मान प्राप्त करके मैं बहुत अभिभूत हूँ, लेकिन महसूस करता हूँ कि यह पुरस्कार किसी व्यक्ति के लिए नहीं है। यह भारतीय संस्कृति और मूल्यों की स्वीकृति है, जिसने हमेशा प्रकृति के साथ सौहार्द बनाने पर बल दिया है।

जलवायु परिवर्तन में भारत की सक्रिय भूमिका को मान्यता मिलना और संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री एंटोनियो गुटेरस तथा यूएनईपी के कार्यकारी निदेशक श्री इरिक सोलहिम द्वारा भारत की भूमिका की प्रशंसा करना प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व का क्षण है। मानव और प्रकृति के बीच विशेष संबंध रहे हैं। प्रारंभिक सभ्यताएं नदियों के तट पर स्थापित हुईं। प्रकृति के साथ सौहार्दपूर्ण तरीके से रहने वाले समाज फलते-फूलते हैं और समृद्ध होते हैं।

मानव समाज आज एक महत्वपूर्ण चौराहे पर खड़ा है। हमने जो रास्ता तय किया है, वह न केवल हमारा कल्याण निर्धारित करेगा, बल्कि हमारे बाद इस ग्रह पर आने वाली पीढ़ियों को भी खुशहाल रखेगा। लालच और आवश्यकताओं के बीच असंतुलन ने गंभीर पर्यावरण असंतुलन पैदा कर दिया है। हम या तो इसे स्वीकार कर सकते हैं या पहले की तरह ही चल सकते हैं या सुधार के उपाय कर सकते हैं।

तीन बातों से यह निर्धारित होगा कि कैसे

एक समाज सार्थक परिवर्तन ला सकता है। पहली, आंतरिक चेतना। इसके लिए अपने गौरवशाली अतीत को देखने से बेहतर कोई स्थान नहीं हो सकता। प्रकृति के प्रति सम्मान भारत की परंपरा के मूल में है। अथर्ववेद में पृथ्वी सूक्त शामिल है, जिसमें प्रकृति और पर्यावरण के बारे में अथाह ज्ञान है: यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः। यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत्सा नो भूमिः पूर्वपेयेदधातु ॥3॥ अर्थात्- माता पृथ्वी अभिनंदन। उनमें सन्निहित हैं, महासागर और नदियों का जल; उनमें सन्निहित है, भोजन जो भूमि की जुताई द्वारा वे प्रकट करती हैं; उनमें निश्चित रूप सभी जीवन समाहित हैं; वे हमें जीवन प्रदान करें। ऋषियों ने पंचतत्व- पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि, आकाश के बारे में यह बताया है कि किस तरह हमारी



जीवन प्रणाली इन तत्वों की समरसता पर आधारित है।

महात्मा गांधी ने ऐसी जीवन शैली को व्यवहार में उतारा, जिसमें पर्यावरण के प्रति भावना प्रमुख है। उन्होंने युक्तिसंगत खपत का आह्वान किया, ताकि विश्व को संसाधनों की कमी का सामना न करना पड़े।

समरस जीवन शैली का पालन करना हमारे लोकाचार का अंग है। जब हमें अनुभव होगा कि हम एक समृद्ध परंपरा के ध्वज-वाहक हैं, तब हमारे कार्यकलाप पर अपने आप सकारात्मक प्रभाव पड़ने लगेगा।

दूसरा पक्ष जन जागरण का है। हमें पर्यावरण संबंधी प्रश्नों पर यथासंभव बातचीत करने, लिखने, चर्चा करने की आवश्यकता है। इसके साथ पर्यावरण संबंधी विषयों पर अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहन देना भी महत्वपूर्ण है। जब हम एक समाज के रूप में पर्यावरण संरक्षण से अपने मजबूत रिश्तों के बारे में जागरूक होंगे और उसके बारे में नियमित रूप से चर्चा करेंगे, तब सतत पर्यावरण की दिशा में हम स्वयं सक्रिय हो जाएंगे। इसीलिए सकारात्मक बदलाव लाने के लिए मैं सक्रियता को तीसरे पक्ष के रूप में रखता हूँ। इस संदर्भ

में मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि भारत के 130 करोड़ लोग स्वच्छ और हरित पर्यावरण की दिशा में सक्रिय हैं और उसके लिए बढ़-चढ़कर काम कर रहे हैं।

स्वच्छ भारत मिशन में हम यह अग्र-सक्रियता देखते हैं, जो भविष्य में सतत विकास से सीधे जुड़ी है। देशवासियों के आशीर्वाद से 8.5 करोड़ आवासों की पहली बार शौचालयों तक पहुंच बनी है और 40 करोड़ से अधिक भारतीयों को अब खुले में शौच करने की आवश्यकता नहीं है।

स्वच्छता का दायरा 39 प्रतिशत से बढ़कर 95 प्रतिशत हो गया है। प्राकृतिक परिवेश पर दबाव कम करने की खोज में यह ऐतिहासिक प्रयास हैं। उज्ज्वला योजना में भी हम यही अग्र-सक्रियता देखते हैं, जिसकी वजह से घरों में होने वाला वायु प्रदूषण बहुत कम हुआ है।

भारत की जीवन रेखा कही जाने वाली नदी गंगा नदी कई हिस्सों में काफी प्रदूषित हो चुकी थी और नमामि गंगे मिशन इस ऐतिहासिक गलती में परिवर्तन कर रहा है। पर्यावरण क्षेत्र में कौशल भारत में हमने समन्वित उद्देश्य अपनाए हैं और विभिन्न योजनाओं जिनमें हरित कौशल विकास कार्यक्रम शामिल है, की शुरुआत की है जिससे पर्यावरण, वानिकी, वन्यजीव और जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में वर्ष 2021 तक 70 लाख युवाओं को कुशल बनाना है। इससे पर्यावरण क्षेत्र में कुशल रोजगारों और उद्यमिता के लिए अनेक अवसर पैदा होंगे।

हमारा देश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर विशेष ध्यान दे रहा है और पिछले चार वर्षों में इस क्षेत्र काफी सुगम और वहन करने योग्य बन गया है। उजाला योजना के तहत करीब 31 करोड़ एलईडी बल्ब बांटे गए। इससे जहां एक तरफ एलईडी बल्बों की कीमतें कम हुईं, वहीं बिजली के बिलों

और कार्बन उत्सर्जन में भी कमी आई।

भारत की पहल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखी जा रही है। मुझे गर्व है कि भारत पेरिस में 2015 में हुई सीओपी-21 वार्ता में आगे रहा है। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन की शुरुआत के मौके पर मार्च, 2018 में दुनिया के कई देशों के नेता नई दिल्ली में इकट्ठा हुए। यह गठबंधन सौर ऊर्जा की क्षमताओं का बेहतर इस्तेमाल करने की एक पहल है। इसके जरिये उन देशों को साथ लाने का प्रयास किया गया है, जहां सूरज की ऊर्जा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। ऐसे समय में जबकि दुनिया में जलवायु परिवर्तन की बात हो रही है, भारत से जलवायु न्याय का आह्वान किया गया है। जलवायु न्याय का अर्थ समाज के उन गरीब और हाशिये पर खड़े लोगों के अधिकारों और हितों से जुड़ा है, जो जलवायु परिवर्तन से सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं।

जैसाकि मैंने पहले भी लिखा है, हमारी

आज की गतिविधियों का प्रभाव आने वाले समय की मानव सभ्यता पर भी पड़ेगा और यह अब हम पर निर्भर करता है कि सतत भविष्य के लिए वैश्विक जिम्मेदारी की शुरुआत हम ही करें। विश्व को पर्यावरण के क्षेत्र में एक ऐसी मिसाल की तरफ बढ़ने की आवश्यकता है, जो सिर्फ सरकारी नियमों तथा कानूनों तक ही न हो, बल्कि इसमें पर्यावरण जागरूकता भी हो। इस दिशा में जो व्यक्ति और संगठन लगातार मेहनत कर रहे हैं मैं उन्हें बधाई देना चाहूंगा, क्योंकि वे हमारे समाज में चिरस्मरणीय बदलाव के अग्रदूत बन चुके हैं। इस दिशा में उनके प्रयत्नों के लिए मैं सरकार की ओर से हर तरह की मदद का आश्वासन देता हूँ। हम सब मिलकर एक स्वच्छ पर्यावरण बनाएंगे, जो मानव सशक्तीकरण की दिशा में आधारशिला होगी। ■

(लेखक भारत के प्रधानमंत्री हैं)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मिला 'चैम्पियंस ऑफ द अर्थ' पुरस्कार

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को 3 अक्टूबर को एक विशेष समारोह में संयुक्त राष्ट्र के सर्वोच्च पर्यावरण पुरस्कार 'चैम्पियंस ऑफ द अर्थ' से सम्मानित किया गया। दिल्ली स्थित प्रवासी भारतीय केंद्र में एक समारोह के दौरान संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव श्री अन्तोनियो ग्युतरेस ने यह पुरस्कार दिया। पुरस्कार समारोह में विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज समेत केंद्रीय मंत्रिमंडल के कई सदस्य मौजूद थे। दरअसल, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन के नेतृत्व और 2022 तक भारत को एक बार इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक से मुक्त कराने के संकल्प के लिए संयुक्त राष्ट्र के सर्वोच्च पर्यावरण सम्मान से सम्मानित किया गया।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के मुताबिक, "इस साल के पुरस्कार विजेताओं को आज के समय के कुछ बेहद अत्यावश्यक पर्यावरणीय मुद्दों से निपटने के लिये साहसी, नवोन्मेष और अथक प्रयास करने के लिये सम्मानित किया जा रहा है।" नीतिगत नेतृत्व की श्रेणी में फ्रेंच राष्ट्रपति श्री एमैनुअल मैक्रों और श्री मोदी को संयुक्त



रूप से इस सम्मान के लिये चुना गया है। गौरतलब है कि चैम्पियंस ऑफ द अर्थ अवार्ड संयुक्त राष्ट्र का सर्वोच्च पर्यावरण पुरस्कार है जो सरकारी, निजी क्षेत्र और सिविल सोसायटी के उन लोगों को दिया जाता है, जिनके कार्यों ने पर्यावरण पर सकारात्मक असर डाला है। ■

तेल की कीमतों पर विपक्ष का पाखंड



अरुण जेटली

कच्चे तेल के अंतरराष्ट्रीय भाव में वृद्धि से उपजी चुनौतियों को विपक्षी नेताओं के ट्वीट्स या टेलीविजन बहस के माध्यम से हल नहीं किया जा सकता है। यह एक गंभीर समस्या है। तेल उत्पादक देशों ने अपने उत्पादन को कम किया है और इसके चलते मांग एवं आपूर्ति में एक असंतुलन स्पष्ट देखा जा सकता है।

वेनेजुएला और लीबिया में मौजूदा राजनीतिक संकट ने भी तेल के उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण ईरान से तेल खरीदने वाले मुल्कों में आपूर्ति को लेकर अनिश्चितता देखी जा रही है। वहीं, शेल गैस की व्यावसायिक आपूर्ति अपनी तय समय सीमा से पीछे चल रही है, जिसके माध्यम से कच्चे तेल की लागत को संतुलित किया जाता है।

कच्चे तेल की उच्च लागत ने विश्व के कई देशों की मुद्रा को भी प्रभावित किया है और यदि भारत के आर्थिक तंत्र की बात करें, तो राजकोषीय घाटे, मुद्रास्फीति, विदेशी मुद्रा भंडार इत्यादि के संबंध में हमारी स्थिति काफी स्थिर है। हमारे कर संग्रह के आंकड़े प्रोत्साहित करने वाले हैं। हालांकि, कच्चे तेल की उच्च कीमतें वर्तमान वित्तीय घाटा पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है और भारतीय मुद्रा को भी प्रभावित कर रही है। वहीं, डॉलर की मजबूती ने वैश्विक मुद्राओं को प्रभावित किया है। इन सभी कारणों के

चलते ईंधन की लागत पर असर पड़ता है, जिसका बोझ जनता को उठाना पड़ रहा है।

कच्चे तेल की कीमतों में अप्रैल और मई के महीने में वृद्धि हुई। उसके बाद यह थोड़ा-सा नरम पड़ा, लेकिन फिर इसके दाम पिछले चार वर्षों में अपने उच्चतम स्तर तक पहुंच गए। हमें यह समझना होगा कि तेल की कीमतों में यह बदलाव लगातार चलता रहता है और इसकी कीमतों के निर्धारण में वैश्विक कारक एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। वहीं, मीडिया का एक वर्ग ऐसा भी है जो कीमतों में वृद्धि होने पर शोर मचाता है और दरों में गिरावट होने पर चुपी साध लेता है। वहीं सरकार की आलोचना करने वाला एक वर्ग ऐसा भी है जो कच्चे तेल की

कोई भी सरकार अपने नागरिकों के प्रति असंवेदनशील नहीं हो सकती है। पिछले चार बजटों में मोदी सरकार ने छोटे और मध्यम वर्ग के कर-दाताओं को हर वर्ष प्रत्यक्ष कर में कुछ राहत देने का प्रयास किया है। इन आयकर रियायतों का संचयी प्रभाव हर साल 97,000 करोड़ रुपये है। वहीं, पहले 13 महीनों में 334 वस्तुओं पर जीएसटी दरों में कमी से उपभोक्ता को 80,000 करोड़ रुपये की वार्षिक राहत मिली है।

कीमतों में वृद्धि के राजनीतिक परिणामों से आनंदित होता है। यह उनकी टिप्पणियों से स्पष्ट भी हो जाता है। हाल में जब तेल की कीमतों में कमी की गई, तो इन आलोचकों ने भारी मन के साथ इसे एक बुरे अर्थशास्त्र की संज्ञा दी। यहां यह स्पष्ट करना जरूरी है कि तेल की कीमतों को तय करने के लिए सरकार अपना हस्तक्षेप नहीं करेगी। वहीं

कांग्रेस के नेतृत्व में चलने वाली यूपीए -2 सरकार ने अपने पांच वर्षों के कार्यकाल में मुद्रास्फीति को दहाई के आंकड़े तक पहुंचा दिया और आज राहुल गांधी टेलीविजन पर दिए गए अपने बयानों और ट्वीट के माध्यम से कीमतों में कटौती की वकालत करते हैं।

केंद्र की एनडीए सरकार राजकोषीय घाटे को कम करने के लिए लगातार सावधानी से कदम उठा रही है। हम साल 2014 से लगातार एक योजनाबद्ध तरीके से राजकोषीय घाटे को कम कर रहे हैं और हमारा यह प्रयास निरंतर जारी रहेगा।

कोई भी सरकार अपने नागरिकों के प्रति असंवेदनशील नहीं हो सकती है। पिछले चार बजटों में मोदी सरकार ने छोटे और मध्यम वर्ग के कर-दाताओं को हर

वर्ष प्रत्यक्ष कर में कुछ राहत देने का प्रयास किया है। इन आयकर रियायतों का संचयी प्रभाव हर साल 97,000 करोड़ रुपये है। वहीं, पहले 13 महीनों में 334 वस्तुओं पर जीएसटी दरों में कमी से उपभोक्ता को 80,000 करोड़ रुपये की वार्षिक राहत मिली है। पिछले साल अक्टूबर के महीने में तेल की कीमतें बढ़ने के कारण केंद्र सरकार ने उत्पाद शुल्क में 2 रुपये की कमी की थी। हमने सभी राज्यों से एक समान कटौती करने का अनुरोध किया है। जहां एक ओर अधिकांश बीजेपी और एनडीए की सरकार वाले राज्यों ने

इस अनुरोध को स्वीकार किया, वहीं दूसरी ओर बाकी राज्यों ने ऐसा करने से इंकार कर दिया। मैंने हमेशा इस बात पर जोर दिया है कि असाधारण स्थिति में राहत देने के लिए अर्थव्यवस्था की क्षमता इसकी वित्तीय ताकत पर निर्भर करती है। हमारी सरकार में प्रत्यक्ष करदाताओं की संख्या में लगातार इजाफा हुआ है और परिणामस्वरूप हमारे

राजस्व के आंकड़ों में वृद्धि हुई है। यही कारण है कि केंद्र सरकार ने उत्पाद शुल्क में कमी कर उपभोक्ता को 2.5 रुपये की राहत देने का फैसला किया है। हमने राज्यों से भी इसी तरह की राहत देने का अनुरोध किया।

जहां एक ओर केंद्र सरकार को तेल कर पर प्राप्त राजस्व स्थिर रहता है, क्योंकि केंद्र सरकार एक निश्चित राशि ही जनता से शुल्क के तौर पर लेती है। वहीं, दूसरी ओर केंद्र को राजस्व के रूप में जो राशि मिलती है, उसका 42% राज्यों को दिया जाता है। राज्य स्वतंत्र रूप से तेल बिक्री पर अपना वैट चार्ज करती हैं। देश में औसत वैट दर लगभग 29% है। इस प्रकार, कुछ महीने पहले राज्यों को कम लागत वाली

कीमत पर जहां 29% वैट मिल रहा था और वहीं अब बढ़ी हुई कीमत पर भी उन्हें 29% वैट मिल रहा है। केंद्र के मुकाबले राज्यों को तेल की कीमतों से ज्यादा फायदा होता है। केंद्र का संग्रह स्थिर बना रहता है। तो ऐसे में राज्य सरकारें लोगों को 2.5 रुपये की राहत देने में सक्षम मानी जा सकती है। तेल की कीमतों में वृद्धि के कारण राज्य सरकारों का कर संग्रह काफी अधिक हुआ है। फिर भी हम आज एक ऐसी स्थिति का सामना कर रहे हैं, जहां गैर-बीजेपी और गैर-एनडीए राज्य सरकारों ने उपभोक्ता को इस परिस्थिति का लाभ पारित करने से इंकार कर दिया है। इससे लोगों को क्या निष्कर्ष निकालना चाहिए? क्या राहुल गांधी

और उनके मजबूरी के साथी आम जनता को राहत देने के लिए केवल ट्वीट्स और टेलीविजन चर्चाओं पर ही अपनी प्रतिबद्धता जाहिर करते रहेंगे? वैट दर और केंद्र से प्राप्त राजस्व के बाद राज्य सरकार तेल पर 60-70% राजस्व प्राप्त करती है। ऐसे में गैर-बीजेपी राज्यों को यह स्पष्ट नहीं करना चाहिए कि साल 2017 और 2018 में उच्च राजस्व प्राप्ति के बाद भी उन्होंने आम जनता को राहत देने से इनकार कर दिया। उन्होंने ट्वीट्स किए और टेलीविजन पर बहस में हिस्सा लिया, लेकिन जब जनता को राहत देने की बात आयी तो उन्होंने इससे अपना मुंह फेर लिया। ■

(लेखक भारत के वित्त मंत्री हैं)

राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना एवं मिजोरम में विधानसभा चुनावों की घोषणा

चुनाव आयोग ने पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों की तारीखों का 6 अक्टूबर को ऐलान कर दिया। आयोग ने छत्तीसगढ़ में दो चरणों में चुनाव कराने की घोषणा की है। इसके अलावा मध्य प्रदेश, मिजोरम, राजस्थान और तेलंगाना में एक चरण में ही चुनाव कराए जाएंगे।

छत्तीसगढ़ में पहले चरण में 18 सीटों पर 12 नवंबर को वोटिंग होगी। इसके बाद दूसरे चरण में 72 विधानसभा क्षेत्रों में 20 नवंबर को चुनाव होंगे।

चुनाव आयोग ने मध्य प्रदेश और मिजोरम में एक ही चरण में 28 नवंबर को वोटिंग कराने का ऐलान किया है। राजस्थान और तेलंगाना में सात दिसंबर को वोटिंग होगी। मतगणना 11 दिसंबर को होगी और उसी दिन परिणाम आ जाएंगे। चुनावों की घोषणा के साथ ही सभी 5 राज्यों में आदर्श आचार संहिता लागू हो गई है। ■

विधानसभा चुनाव 2018		
राज्य	सीट	मतदान
 छत्तीसगढ़	90	12 और 20 नवंबर
 मध्य प्रदेश	230	28 नवंबर
 मिजोरम	40	28 नवंबर
 राजस्थान	200	7 दिसंबर
 तेलंगाना	119	7 दिसंबर
मतगणना 11 दिसंबर		

राजमाता अपने कार्यों से लोकमाता बनी



प्रमात झा

“राजमाता विजयाराजे सिंधिया” सरलता, सहजता और संवेदनशीलता की त्रिवेणी थी। भारतीय राजनीति में उन्होंने मध्य प्रदेश की तत्कालीन मुख्यमंत्री डी.पी. मिश्रा की सरकार को जब गिराया था और जनसंघ के विधायकों के समर्थन से गोविंद नारायण सिंह को मध्यप्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया था, तभी से लोग राजनैतिक तौर पर राजमाता की ताकत का एहसास करने लगे थे। उन्हें लोग राजमाता के नाम पर अवश्य जानते थे, पर जिस दिन उन्होंने तत्कालीन कांग्रेस की सरकार पलटी थी और गठबंधन की सरकार बनाई थी, उसी समय लोगों ने कहना शुरू कर दिया था कि अब राजमाता विजयाराजे सिंधिया जनसंघ की सदस्यता ग्रहण कर लेगी।

हुआ भी यही और राजमाता ने जनसंघ की सदस्यता ग्रहण की। अटलजी और आडवाणीजी से चर्चा कर भारतीय जनसंघ में सक्रिय हो गईं। वे राजमाता से लोकमाता की ओर अग्रसर होने लगीं। उनका कुशाभाऊ ठाकरे से बहुत लगाव था। वे उन्हें पुत्रवत् मानती थीं। उन्होंने बिना कुशाभाऊ ठाकरे से पूछे कभी कोई राजनैतिक निर्णय नहीं लिया। कुशाभाऊ ठाकरे भी उनका बहुत सम्मान करते थे।

राजमाता विजयाराजे सिंधिया के पुत्र माधवराव सिंधिया और राजमाता के तत्कालीन सहयोगी महेन्द्र सिंह कालूखेडा, दोनों ही जनसंघ से चुनाव लड़े। राजमाता ने माधवराव सिंधिया को पहली बार सांसद

का चुनाव भारतीय जनसंघ से लड़ाया और वे भारतीय जनसंघ के सांसद बने। इसी तरह महेन्द्र सिंह कालूखेडा भी जनसंघ से ही निर्वाचित हुए। माधवराव सिंधिया सदैव अपनी माता जी के साथ रहे।

धीरे-धीरे राजमाता जनसंघ की नेता के नाते पूरे देश में उनका अखंड दौरा प्रारम्भ हुआ। भारतीय जनसंघ को एक सशक्त महिला नेत्री मिला। राजमाता पूरी तरह अपने चुनाव चिन्ह “दीए” को लेकर गांव-गांव पहुंचने लगीं। भारतीय जनसंघ की वैचारिक पृष्ठभूमि तेजी से तैयार होने लगी। इस बीच देश में इंदिराजी ने आपातकाल लगा दिया।



इस दौरान राजमाता को इंदिराजी ने बुलाया और कहा कि आप बीस सूत्रीय का समर्थन करें। इंदिराजी की इस बात पर राजमाता उनके सामने खड़ी हो गईं। उन्होंने इंदिरा जी से साफ तौर कहा कि मैं जीवन में कांग्रेस के बीस सूत्रीय का समर्थन नहीं करूंगी। आप इंदिराजी चाहे जो करें। “मैं जनसंघ की विचारधारा को नहीं छोड़ूंगी।” राजमाता ने

आगे कहा कि मैं जेल जाना पंसद करूंगी-लेकिन आपातकाल जैसे काले कानून का कभी समर्थन नहीं करूंगी। विचारधारा के प्रति ऐसी प्रतिबद्धता ही देश में और दल में उन्हें रातों-रात ऊंचाई पर ले गयी। धीरे-धीरे उनका संपर्क अनेक वरिष्ठ लोगों से होने लगा।

राजमाता जेल गईं, पर इंदिराजी के सामने झुकी नहीं। इसी बीच आपातकाल के भय से माधवराव सिंधिया भारत छोड़कर चले गए, उन्होंने “मां” की तरह हिम्मत नहीं दिखाई। लोगों का मानना है कि “वे” घबड़ा गए, यहीं पर राजमाता ने कहा कि मुझे ऐसा लगा रहा था “भैया” माधवराव भी इंदिराजी के आगे नहीं झुकेंगे पर ऐसा नहीं हुआ। पता नहीं माधवराव सिंधिया कहां चले गए। सन् 1977 में चुनाव हुए तो माधवरावजी जनसंघ के बजाए गुना से लोकसभा निर्दलीय लड़े। वहीं जब जनता पार्टी चली गई तो माधवराव सिंधियाजी कांग्रेस में चले गए, राजमाता को अच्छा नहीं लगा। उनका कहना था कि जिस इंदिरा जी ने उन्हें 19 महीने जेल की कालकोठरी में बिना वजह डाल दिया था, और मुझे यातनाएं दी थी, ऐसी इंदिराजी की पार्टी में “भैया” को नहीं जाना था।

सन् 1980 में राजमाता से जनता पार्टी के तत्कालीन अध्यक्ष चन्द्रशेखर ने आग्रह किया कि वे इंदिरा गांधी के विरुद्ध जनता पार्टी की ओर से रायबरेली से लोकसभा चुनाव लड़ें। राजमाता ने कहा कि जो पार्टी तय करे। राजमाता रायबरेली गईं और इंदिरा गांधी के खिलाफ चुनाव लड़ीं। वे पीछे नहीं हटीं। वे चुनाव हार गईं, लेकिन उन्होंने संगठन के निर्णय को बिना किसी विरोध के शिरोधार्य किया। संगठननिष्ठ होने का यह अनुपम उदाहरण है।

जनता पार्टी की सरकार केन्द्र में बनी।

उस समय तत्कालीन नेताओं को अनेक सरकारी पदों का आग्रह किया, पर राजमाता ने उसे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने सदैव संगठन को ही महत्व दिया।

राजमाता धीरे-धीरे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिन्दू परिषद से जुड़ती चली गई। एक ऐसा क्षण आया कि राजमाता को बैंक बैलेंस से अपना पैसा निकालने पर तत्कालीन कांग्रेस की केन्द्र सरकार ने आपातकाल में रोक लगा दी थी। राजमाता ने विश्व हिन्दू परिषद के तत्कालीन महासचिव अशोक सिंहल को विहिप के लिए एक लाख रुपये दान देने की घोषणा कर दी। वे जेल चली गई। आपातकाल हटा, राजमाता जेल से बाहर आयी तो उन्होंने अशोक सिंहल से कहा कि मुझे आपको अशोक जी एक लाख रुपये देने है। लेकिन मेरे खाते पर रोक लगी है। मैं खाता आपरेट नहीं कर सकती। अतः आप एक काम करें कि यह मेरी हीरे की अंगूठी है, इसे कहीं देकर एक लाख रुपये ले लें। यह बात मैं इसलिए कह रही हूँ कि मैंने आपको वचन दिया था। अशोक सिंहल ने कहा कि राजमाताजी आपका इतना कहना ही हमें प्रेरणा देता है। इसी बीच श्रीमती यशोधराजे ने अम्मा महाराज से कहा कि “अम्मा” आप ये क्या कर रही हैं। यह तो आपकी अंगुली में महाराज साहब की निशानी है। आप चिंता नहीं करें, हम विहिप को यह राशि दे देंगे। इस पर राजमाता ने यशोधराजजी से कहा कि वचन की प्रतिबद्धता मेरे लिए पहले है, इसलिए मैं यह आग्रह कर रही हूँ। राजमाता की इस घटना को जब हम याद करते हैं तो मन भाव विभोर हो जाता है। साथ ही लगता है कि उनकी अपने वचन के प्रति कितनी बड़ी प्रतिबद्धता थी! यह आज के कार्यकर्ताओं को भी विचार करना चाहिए। वचन की प्रतिबद्धता से व्यक्ति के चरित्र को समाज स्वीकरता है।

राजमाता के भाषण लिखने का मुझे सौभाग्य मिला। उनके निजी सचिव सरदार संभाजी राव आंग्रे मुझे से स्वदेश में आने पर विषय बता देते थे और हम भाषण तैयार कर देते थे। राजमाता सात्विक और आध्यात्मिक थी। हमने रामजन्मभूमि आंदोलन में राजमाता की निडरता, समर्पण और साहस को करीब से उस समय देखा जब मैं राम जन्मभूमि की रिपोर्टिंग करने अयोध्या गया था।

राजमाता के सैद्धांतिक प्रतिबद्धता का अनुपम उदाहरण उस समय आया, जब माधवराव सिंधिया जनसंघ छोड़कर कांग्रेस में चले गए। उन्हें बहुत दुःख हुआ। ऐसे

थाने में हजारों कार्यकर्ताओं के साथ पहुंची और रिपोर्ट दर्ज कराया। उन्होंने अपने ऊपर कभी भी राजघराने या राजशाही को हावी नहीं होने दिया। वे राजमाता होते हुए सदैव लोकमाता के मार्ग पर चली। यही कारण है कि देश ने उन्हें लोकमाता के रूप में स्वीकार किया।

राजमाताजी वात्सल्य की धनी थी। वे ममतामयी थी। उन्हें एक बार जनसंघ का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने की दृष्टि से सन् 1972 में स्वयं अटलजी और आडवाणीजी आए। राजमाता से दोनों नेताओं ने चर्चा की। राजमाता ने कहा कि मुझे एक दिन का समय चाहिए। राजमाता आध्यात्मिक भी थी। वे दत्तिया पीताम्बरा पीठ गईं, अपने गुरु जी से चर्चा की और लौटी तो उन्होंने अटलजी और आडवाणीजी से कहा कि वे भारतीय जनसंघ की सेवा एक कार्यकर्ता के रूप में सदैव करती रहेगी। उन्हें पदों के प्रति कभी आकर्षण नहीं रहा।

राजमाता विजयाराजे सिंधिया ने भारतीय राजनीति में महिला के नाते देश में एक आदर्श कायम किया। राष्ट्रहित के प्रति उनकी जागरूकता ने ही उन्हें राजमाता से लोकमाता बनाया। भारतीय जनसंघ से भाजपा तक उनकी यात्रा में अनेक उतार-चढ़ाव आए, पर उन्होंने अपने सिद्धांत और विचारधारा के प्रति समर्पण को कभी नहीं छोड़ा। भारतीय राजनीति में उनकी आदर्श भूमिका के कारण ही केन्द्र सरकार और मध्य प्रदेश की सरकार ने साथ ही भाजपा संगठन ने राजमाता विजयाराजे सिंधिया की जन्म शताब्दी मनाने का निर्णय किया। राजमाता के प्रति सरकार और संगठन का यह निर्णय स्वयं जाहिर करता है कि राजमाता का कृतित्व कितना महान था। महानता और उदारता ही उनकी पूंजी थी। ■

(लेखक सांसद एवं भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं)

राजमाता विजयाराजे सिंधिया ने भारतीय राजनीति में महिला के नाते देश में एक आदर्श कायम किया। राष्ट्रहित के प्रति उनकी जागरूकता ने ही उन्हें राजमाता से लोकमाता बनाया। भारतीय जनसंघ से भाजपा तक उनकी यात्रा में अनेक उतार-चढ़ाव आए, पर उन्होंने अपने सिद्धांत और विचारधारा के प्रति समर्पण को कभी नहीं छोड़ा।

अवसर पर उन्होंने कहा कि मेरा एक बेटा मुझे छोड़कर चला गया, लेकिन आज भाजपा के लाखों बेटे मेरे साथ हैं। उनके जीवन के एक नहीं अनेक उदाहरण ऐसे हैं, जो हमें सदैव प्रेरणा देते रहेंगे।

एक बार प्रख्यात वकील श्री राम जेटमलानी एक मुकदमे में ग्वालियर हाईकोर्ट आए। उनके आगमन पर कांग्रेस के लोगों ने उन पर पथराव किया। जेटमलानी के सिर में चोट आयी। उस समय राम जेटमलानी भाजपा में थे। राजमाता को जब ज्ञात हुआ तो वे भाजपा का झंडा लेकर स्वयं ग्वालियर के इंदरगंज

गांधीजी अपने सिद्धांतों के प्रति अंतिम सांस तक प्रतिबद्ध रहे : नरेन्द्र मोदी

आज हम अपने प्यारे बापू की 150वीं जयंती के आयोजनों का शुभारंभ कर रहे हैं। बापू आज भी विश्व में उन लाखों-करोड़ों लोगों के लिए आशा की एक किरण हैं जो समानता, सम्मान, समावेश और सशक्तीकरण से भरपूर जीवन जीना चाहते हैं। विरले ही लोग ऐसे होंगे, जिन्होंने मानव समाज पर उनके जैसा गहरा प्रभाव छोड़ा हो। महात्मा गांधी ने भारत को सही अर्थों में सिद्धांत और व्यवहार से जोड़ा था। सरदार पटेल ने ठीक ही कहा था, 'भारत विविधताओं से भरा देश है। इतनी विविधताओं वाला कोई अन्य देश धरती पर नहीं है। यदि कोई ऐसा व्यक्ति था, जिसने उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष के लिए सभी को एकजुट किया, जिसने लोगों को मतभेदों से ऊपर उठाया और विश्व मंच पर भारत का गौरव बढ़ाया तो वे केवल महात्मा गांधी ही थे। और, उन्होंने इसकी शुरुआत भारत से नहीं, बल्कि दक्षिण अफ्रीका से की थी।'

बापू ने भविष्य का आकलन किया और स्थितियों को व्यापक संदर्भ में समझा। वह अपने सिद्धांतों के प्रति अपनी अंतिम सांस तक प्रतिबद्ध रहे। 21वीं सदी में भी महात्मा गांधी के विचार उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उनके समय में थे और वे ऐसी अनेक समस्याओं का समाधान कर सकते हैं, जिनका सामना आज विश्व कर रहा है। एक ऐसे विश्व में जहां आतंकवाद, कट्टरपंथ, उग्रवाद और विचारहीन नफरत देशों और समुदायों को विभाजित कर रही है, वहां शांति और अहिंसा के महात्मा गांधी के स्पष्ट आह्वान में मानवता को एकजुट करने की शक्ति है।

ऐसे युग में जहां असमानताएं स्वाभाविक हैं, बापू का समानता और समावेशी विकास का सिद्धांत विकास के आखिरी पायदान पर रह रहे लाखों लोगों के लिए समृद्धि के एक नए युग का सूत्रपात कर सकता है। एक ऐसे समय में, जब जलवायु-परिवर्तन और पर्यावरण की रक्षा का विषय चर्चा के केंद्र में हैं, दुनिया को गांधी जी के विचारों से सहारा मिल सकता है। उन्होंने एक सदी से भी अधिक समय पहले 1909 में मनुष्य की आवश्यकता और उसके लालच के बीच अंतर स्पष्ट किया था।

प्राकृतिक संसाधनों पर गांधी जी का संदेश

उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते समय संयम और करुणा- दोनों का अनुपालन करने की सलाह दी और स्वयं इनका पालन करके मिसाल कायम करते हुए नेतृत्व प्रदान किया। वह अपना शौचालय स्वयं साफ करते थे और आसपास के वातावरण की स्वच्छता सुनिश्चित करते थे। वह यह सुनिश्चित करते थे कि पानी कम से कम बर्बाद हो और अहमदाबाद में उन्होंने इस बात पर विशेष

ध्यान दिया कि दूषित जल साबरमती के जल में ना मिले।

रचनात्मक कार्यक्रम

कुछ ही समय पहले महात्मा गांधी द्वारा लिखित एक सारगर्भित, समग्र और संक्षिप्त लेख ने मेरा ध्यान आकृष्ट किया। 1941 में बापू ने 'रचनात्मक कार्यक्रम: उसका अर्थ और स्थान' नाम से एक लेख लिखा था, जिसमें उन्होंने 1945 में उस समय बदलाव भी किए थे जब स्वतंत्रता आंदोलन को लेकर एक नया उत्साह था। उस दस्तावेज में बापू ने विविध विषयों पर चर्चा की थी जिनमें ग्रामीण विकास, कृषि का सशक्तीकरण, साफ-सफाई को बढ़ावा, खादी को प्रोत्साहन, महिलाओं का सशक्तीकरण और आर्थिक समानता सहित अनेक विषय शामिल थे। मैं अपने प्रिय भारतवासियों से अनुरोध करूंगा कि वे गांधी जी के 'रचनात्मक कार्यक्रम' को पढ़ें। यह ऑन लाइन एवं ऑफलाइन उपलब्ध है। हम कैसे गांधी जी के सपनों का भारत बना सकते हैं- इस कार्य के लिए इसे पथ प्रदर्शक बनाएं।

'रचनात्मक कार्यक्रम' के बहुत से विषय आज भी प्रासंगिक हैं और भारत सरकार ऐसे बहुत से बिंदुओं को पूरा कर रही है जिनकी



चर्चा पूज्य बापू ने सात दशक पहले की थी, लेकिन जो आज तक पूरे नहीं हुए। गांधी जी के व्यक्तित्व के सबसे खूबसूरत आयामों में से एक बात यह थी कि उन्होंने प्रत्येक भारतीय को इस बात का अहसास दिलाया था कि वे भारत की स्वतंत्रता के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने एक अध्यापक, वकील, चिकित्सक, किसान, मजदूर, उद्यमी, सभी में आत्म-विश्वास की भावना भर दी थी कि जो कुछ भी वे कर रहे हैं उसी से वे भारत के स्वाधीनता संग्राम में योगदान दे रहे हैं।

उसी संदर्भ में, आइए आज हम उन कामों को अपनाएं जिनके बारे में हमें लगता है कि गांधी जी के सपनों को पूरा करने के लिए हम इन्हें कर सकते हैं। भोजन की बर्बादी को पूरी तरह बंद करने जैसी साधारण सी चीज से लेकर अहिंसा और अपनेपन की भावना तक को अपना

कर इसकी शुरुआत की जा सकती है। आइए हम इस बात पर विचार करें कि कैसे हमारे क्रियाकलाप भावी पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ और हरित वातावरण बनाने में योगदान दे सकते हैं। करीब आठ दशक पहले जब प्रदूषण का खतरा इतना बड़ा नहीं था तब महात्मा गांधी ने साइकिल चलाना शुरू किया था। जो लोग उस समय अहमदाबाद में थे, इस बात को याद करते हैं कि गांधी जी कैसे गुजरात विद्यापीठ से साबरमती आश्रम साइकिल से जाते थे।

असल में, मैंने पढ़ा है कि गांधी जी के सबसे पहले विरोध प्रदर्शनों में वह घटना शामिल है जब उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में उन कानूनों का विरोध किया जो लोगों को साइकिल का उपयोग करने से रोकते थे। कानून के क्षेत्र में एक समृद्ध भविष्य होने के बावजूद जोहॉन्सबर्ग में आने-जाने के लिए गांधी जी साइकिल का प्रयोग करते थे।

ऐसा कहा जाता है कि जब एक बार जोहॉन्सबर्ग में प्लेग का प्रकोप हुआ तो गांधी जी एक साइकिल से सबसे ज्यादा प्रभावित स्थान पर पहुंचे और राहत कार्य में जुट गए।

क्या आज हम इस भावना को अपना सकते हैं। ये त्योहारों का समय है और पूरे देश में लोग नए कपड़े, उपहार, खाने की चीजें और अन्य वस्तुएं खरीदेंगे। ऐसा करते समय हमें गांधी जी की एक बात ध्यान में रखनी चाहिए जो कि उन्होंने हमें एक ताबीज के रूप में दी थी। आइए हम इस बात पर विचार करें कि कैसे हमारे क्रियाकलाप अन्य भारतीयों के जीवन में समृद्धि का दीया जला सकते हैं। चाहे वे खादी के उत्पाद हों या उपहार की वस्तुएं या फिर खाने पीने का सामान, जिन भी चीजों का वे उत्पादन करते हैं उन्हें

खरीद कर हम एक बेहतर जिंदगी जीने में अपने साथी भारतीयों की मदद करेंगे। हो सकता है कि हमने उन्हें कभी देखा ना हो और हो सकता है कि शेष जीवन में भी हम उनसे कभी ना मिलें। लेकिन बापू को हम पर गर्व होगा कि हम अपने क्रियाकलापों से अपने साथी भारतीयों की मदद कर रहे हैं।

स्वच्छ भारत अभियान से बापू को श्रद्धांजलि

पिछले चार वर्षों में 'स्वच्छ भारत अभियान' के जरिये 130 करोड़ भारतीयों ने महात्मा गांधी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। स्वच्छ भारत अभियान के चार वर्ष आज पूरे हो रहे हैं। प्रत्येक भारतीय के कठोर परिश्रम के कारण यह अभियान आज एक ऐसे जीवंत जन-आंदोलन के रूप में बदल चुका है जिसके परिणाम सराहनीय हैं। साढ़े आठ करोड़ से ज्यादा परिवारों के पास अब पहली बार शौचालय

की सुविधा है। चालीस करोड़ से ज्यादा भारतीयों को अब खुले में शौच के लिए नहीं जाना पड़ता है। चार वर्षों के छोटे से कालखंड में स्वच्छता का दायरा 39% से बढ़कर 95% पर पहुंच गया है। 21 राज्य और संघशासित क्षेत्र और साढ़े चार लाख गांव अब खुले में शौच से मुक्त हैं।

शौचालय बने वरदान

'स्वच्छ भारत अभियान' आत्मसम्मान और बेहतर भविष्य से संबद्ध है। यह उन करोड़ों महिलाओं के भले की बात है जो हर सुबह खुले में दैनिक-चर्या से निवृत्त होते समय मुंह छुपाती थीं। मुंह छुपाने की यह समस्या अब इतिहास बन चुकी है। साफ-सफाई के अभाव में जो बच्चे बीमारियों का शिकार बनते थे, उनके लिए शौचालय वरदान बना है। कुछ दिन पहले राजस्थान के एक दिव्यांग भाई ने मेरे 'मन की बात कार्यक्रम' के दौरान मुझे फोन किया था। उन्होंने बताया

था कि वे दोनों आंखों से देखने में लाचार थे, लेकिन जब उन्होंने अपने घर में खुद का शौचालय बनवाया तो उनकी जिंदगी में कितना बड़ा सकारात्मक बदलाव आया।

उनके जैसे अनेक दिव्यांग भाई और बहन हैं जो कि सार्वजनिक स्थलों और खुले में शौच जाने की असुविधा से मुक्त हुए हैं। जो आशीर्वाद उन्होंने मुझे दिया वे मेरी स्मृति में हमेशा के लिए अंकित रहेंगे। आज बहुत बड़ी संख्या उन भारतीयों की है जिन्हें स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने का सौभाग्य नहीं मिला। हमें उस समय देश के लिए जीवन बलिदान करने का अवसर

तो नहीं मिला, लेकिन अब हमें हर हाल में देश की सेवा करनी चाहिए और ऐसे भारत का निर्माण करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए जैसे भारत का सपना हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने देखा था।

आज गांधी जी के सपनों को पूरा करने का एक बेहतरीन अवसर हमारे पास है। हमने काफी कुछ किया है और मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले समय में हम और बहुत कुछ करने में सफल रहेंगे। 'वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीर परायी जाने रे', ये बापू जी की सबसे प्रिय पंक्तियों में से एक थी। इसका अर्थ है कि भली आत्मा वह है जो दूसरों के दुःख का अहसास कर सके। यही वो भावना थी जिसने उन्हें दूसरों के लिए जीवन जीने को प्रेरित किया। हम, एक सौ तीस करोड़ भारतीय, आज उन सपनों को पूरा करने के लिए मिलकर काम करने को प्रतिबद्ध हैं, जो बापू ने देश के लिए देखे और जिसके लिए उन्होंने अपने जीवन का बलिदान दिया था। ■

'स्वच्छ भारत अभियान' आत्मसम्मान और बेहतर भविष्य से संबद्ध है। यह उन करोड़ों महिलाओं के भले की बात है जो हर सुबह खुले में दैनिक-चर्या से निवृत्त होते समय मुंह छुपाती थीं। मुंह छुपाने की यह समस्या अब इतिहास बन चुकी है। साफ-सफाई के अभाव में जो बच्चे बीमारियों का शिकार बनते थे, उनके लिए शौचालय वरदान बना है।

‘बहुआयामी फायदा पहुंचाने वाला फैसला’

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्रीय कैबिनेट ने रबी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को बढ़ाने का निर्णय लिया। फसल वर्ष 2018-19 के लिए गेहूं का समर्थन मूल्य 1735 रुपये से बढ़ाकर 1840 रुपये, सरसों का समर्थन मूल्य 4000 से बढ़ाकर 4200 रुपये, चना का समर्थन मूल्य 4400 से बढ़ाकर 4620 रुपये, मसूर का समर्थन मूल्य 4250 से बढ़ाकर 4475 रुपये, कुसुम का समर्थन मूल्य 4100 से बढ़ाकर 4945 रुपये और जौ का समर्थन मूल्य 1410 से बढ़ाकर 1440 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया गया है।

भा रतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 3 अक्टूबर को किसानों के हित में खरीफ फसलों के बाद अब रबी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में अभूतपूर्व एवं ऐतिहासिक वृद्धि के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को हार्दिक बधाई दी और मोदी सरकार के इस कदम को किसानों की स्थिति में सुधार लाने एवं उनकी आय को दुगुना करने की दिशा में क्रांतिकारी कदम करार दिया।

श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की कैबिनेट कमिटी की बैठक में रबी फसलों की एमएसपी को उनके लागत मूल्य से डेढ़ गुना करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया, जो कि देश के किसानों के उत्थान में निर्णायक सिद्ध होगा। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार निरंतर देश के किसानों की आय को दुगुना कर उनके जीवन को सुगम बनाने के लिए प्रयासरत है। रबी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी करने पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह का भारतीय जनता पार्टी के करोड़ों कार्यकर्ताओं की ओर से मैं हार्दिक अभिनंदन करता हूं।

श्री शाह ने कहा कि देश की आजादी के बाद से ही किसानों की यह मांग थी कि उन्हें उनकी फसलों का उचित मूल्य प्राप्त होना चाहिए। इसके लिए देश में कई किसान आंदोलन हुए और कई किसानों ने अपने प्राणों की आहुति भी दी, लेकिन कांग्रेस एवं उनके सहयोगियों की किसी भी सरकार ने फसल की एमएसपी को लागत मूल्य से डेढ़ गुना करने का साहस नहीं किया। उन्होंने कहा कि आज देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार ने खरीफ के बाद रबी फसलों की एमएसपी में भी 50% या उससे अधिक की वृद्धि कर किसानों की सात दशकों की मांग को पूरा किया है। उन्होंने कहा कि पिछली कांग्रेस सरकारों के विपरीत जिनकी योजनायें केवल फाइलों और उनके घोषणापत्रों पर ही रह जाती थी, यह मोदी सरकार अपनी योजनाओं को जमीनी स्तर तक पहुंचाने में सफल हुई है।

श्री शाह ने कहा कि मोदी सरकार के गठन के साथ ही केंद्र की

भारतीय जनता पार्टी सरकार ने किसानों के हित में एक-के-बाद-एक कई अहम फैसले लिए हैं। साथ ही, किसानों की भलाई के लिए किये गए अपने वादों को अक्षरशः पूर्ण करने का सार्थक प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि सबसे पहले यूरिया की नीम कोटिंग की गई जिससे यूरिया की कालाबाजारी पूर्णतः रुक गई और किसानों के लिए यह सहज रूप से उपलब्ध हो पाई। इसके पश्चात् खादों/उर्वरकों के मूल्य में कटौती की गई। प्रभावी प्रधानमंत्री फसल बीमा के रूप में ‘सुरक्षित फसल, समृद्ध किसान’ की व्यापक अवधारणा को मूर्त रूप दिया गया, इसमें और सुधार की प्रक्रिया में शुरू है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री सिंचाई योजना के माध्यम से हर खेत को पानी सुलभ कराया गया है और सालों से लटकी हुई सिंचाई परियोजनाओं को भी शुरू किया गया है। स्वायत्त हेल्थ कार्ड के माध्यम से मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार हो रहा है और कृषि उत्पादन में वृद्धि हो रही है। उन्होंने कहा कि किसानों को फसल नुकसान के कारण मिलने वाली सहायता राशि में भी वृद्धि की गई है। उन्होंने कहा कि ये सभी निर्णय बताते हैं कि मोदी सरकार किसानों की भलाई, उनके उत्थान एवं उनकी आय को दुगुना करने के लिए कृतसंकल्पित है।



राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि किसानों की माली हालत में सुधार, कृषि को बचाने और गांवों को सक्षम बनाने में एमएसपी में डेढ़ गुने की वृद्धि मील का पत्थर साबित होगी। इससे देश के करोड़ों किसानों को सीधा फायदा पहुंचेगा, छोटे किसानों को इसका सबसे ज्यादा लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने फसलों की एमएसपी में डेढ़ गुने की वृद्धि कर किसानों को उनका अधिकार दिया है, जिससे इन्हें वंचित रखा गया था।

श्री शाह ने कहा कि फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि से किसानों की माली हालत तो सुधरेगी ही। साथ ही, खेतिहर मजदूर की हालत में भी व्यापक सुधार होगा, गांवों को भी ताकत मिलेगी। उन्होंने कहा कि एमएसपी में डेढ़ गुने की वृद्धि किसान, खेतिहर मजदूर, गांव - सभी के लिए एक बहुआयामी फायदा पहुंचाने वाला फैसला है, जिसके लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं उनके केन्द्रीय मंत्रिमंडल के सभी सदस्य हार्दिक बधाई के पात्र हैं। ■

'बाबा साहब के कर्तृत्व को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास कर रही है भाजपा सरकार'

भा रतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 4 अक्टूबर को मेडिकल कॉलेज ग्राउंड, बीकानेर में संभाग स्तरीय अनुसूचित जाति सम्मेलन को संबोधित किया और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार द्वारा अनुसूचित जाति, पिछड़ों, आदिवासी एवं किसानों के कल्याण के लिए किये गए कार्यों पर विस्तार से चर्चा करते हुए कांग्रेस पर इन वर्गों की अनदेखी का आरोप लगते हुए करारा प्रहार किया।

श्री शाह ने कहा कि आजादी के बाद से ही बाबा साहब को उनके विराट व्यक्तित्व के अनुरूप कभी स्थान नहीं दिया गया, बल्कि कांग्रेस पार्टी द्वारा उन्हें कमतर आंकने के निरंतर षडयंत्र होते रहे। उन्होंने कहा कि देश में पहली बार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के रूप में देश को एक ऐसा सच्चा सेवक मिला है, जिसके नेतृत्व में बाबा साहब के सपने ईमानदारी से धरातल पर साकार होते दिख रहे हैं। अब दलित समाज सक्षम, शिक्षित और प्रगतिशील दिशा में सशक्त रूप में आगे बढ़ रहा है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि बड़ी हैरत की बात है कि कांग्रेस पार्टी जिन बाबा साहब और दलितों के नाम पर अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने की कोशिश करती रही, उसने धरातल पर न तो बाबा साहब को सम्मान दिया और न ही दलित समाज को। उन्होंने कहा कि 70 साल बाद कांग्रेस को अंबेडकर याद आ रहे हैं, लेकिन ऐसे अनेक बड़े सवाल हैं जो कांग्रेस की बाबा साहब की अनदेखी को इंगित करते हैं। उन्होंने



प्रश्न पूछते हुए कहा कि राहुल गांधी बताइये कि आजादी के तुरंत बाद बाबा साहब को संसद में आने से किसने रोका, बाबा साहब को उप-चुनाव लड़ने से किसने रोका, जब तक केंद्र में कांग्रेस की सरकार रही, बाबा साहब को भारत रत्न क्यों नहीं दिया गया, बाबा साहब का तैल चित्र संसद में क्यों नहीं लगने दिया और बाबा साहब से जुड़े पंचतीर्थों का पुनरुद्धार कांग्रेस ने क्यों नहीं किया?

श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी और केंद्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार बाबा साहब के संघर्षों, त्याग और बलिदान की गाथा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए हरसंभव प्रयास कर रही हैं। उन्होंने कहा कि बाबा साहब की स्मृति में पंचतीर्थ का निर्माण किया जा रहा है। इनमें से पहला तीर्थ उनकी जन्मभूमि मऊ (मध्य प्रदेश) में बनाया जा रहा है। दूसरा लंदन में बनाया जा रहा है, जहां बाबा साहब ने वकालत की पढ़ाई की। तीसरा तीर्थ दीक्षाभूमि के नाम से नागपुर में बनाया गया है। चौथा तीर्थ बाबा साहब की महापरिनिर्वाण स्थल के रूप में दिल्ली में उनको समर्पित है, बाबा साहब की स्मृति में पांचवा तीर्थ मुंबई में चैतन्य भूमि के नाम से बनाया जा रहा है, जबकि इन पुण्य स्मृतियों पर

बहुत पहले ही कार्य हो जाना चाहिये था। उन्होंने कहा कि नई दिल्ली के जनपथ में हमने बाबा साहब को समर्पित अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर का निर्माण किया, जहां हमने हाल ही में पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक करके बाबा साहब को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि बाबा साहब को भारत रत्न सम्मान तब दिया गया जब केंद्र से कांग्रेस सरकार की विदाई हुई। जब केंद्र में श्रद्धेय अटल जी के नेतृत्व में भाजपा-नीत एनडीए की सरकार आई, तब जाकर संसद में बाबा साहब का तैल चित्र लग पाया। उन्होंने कहा कि जब मोदी जी गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब बड़ौदा में बाबा साहब के स्मारक का निर्माण किया गया। उन्होंने कहा कि यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी हैं जिन्होंने संसद का विशेष सत्र बुलाकर बाबा साहब की जयंती मनाई और उन्हें समग्र राष्ट्र की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की। यह श्री मोदी हैं जिन्होंने रिजर्व बैंक से बाबा साहब की याद में सिक्के की शुरुआत की।

कांग्रेस अध्यक्ष पर करारा प्रहार करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि आजादी के 70 साल बाद आपको दलित हित की याद आई है, जब आप सत्ता में थे तब आपने क्या किया?

श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से हर बैंक से दलितों एवं आदिवासियों को स्वरोजगार के लिए मुद्रा बैंक योजना के तहत लोन देने का आग्रह किया जिसका परिणाम यह रहा कि मुद्रा बैंक योजना में 30% से अधिक लाभार्थी दलित और आदिवासी युवा हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का सबसे अधिक लाभ देश के अनुसूचित समाज को ही मिला है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि केंद्र में 10 सालों तक सोनिया-मनमोहन की कांग्रेस सरकार चली, लेकिन दलित समाज के विकास के लिए बजट में कोई बढ़ोत्तरी नहीं की गई। मोदी सरकार ने आते ही एक ही साल में इसमें लगभग 12% और पांच सालों में लगभग 37% की बढ़ोत्तरी की। इतना ही नहीं, दलित छात्रों के प्री मैट्रिक आर्थिक मदद में भी वृद्धि करते हुए रकम की अदायगी की गई है।

श्री शाह ने कहा कि वसुंधरा सरकार के दौरान राजस्थान में दलितों के ऊपर होने वाले अत्याचार के आंकड़े में काफी कमी आई है। उन्होंने कहा कि पिछली कांग्रेस सरकार की तुलना में भाजपा की वसुंधरा सरकार में इसमें लगभग 11% की कमी दर्ज की गई है। इतना ही नहीं, वसुंधरा सरकार ने दलित भाइयों के लिए अनुसूचित जाति विकास सहकारी निगम के दो लाख रुपये तक के लोन माफ़ कर दिए हैं। साथ ही, राज्य की सभी नगरपालिकाओं में एक-एक अंबेडकर भवन के लिए 80 करोड़ रुपये से अधिक खर्च किया गया है। ■

‘हमने पूर्वांचल को विकास की धारा से जोड़ने का ऐतिहासिक कार्य किया है’

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने दिल्ली के रामलीला मैदान में आयोजित पूर्वांचल महाकुंभ में एक विशाल जनसभा को संबोधित किया और कांग्रेस एवं आम आदमी पार्टी पर जोरदार हमला किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि पिछले साढ़े चार सालों में, पूरे देशभर में जो विकास हुआ, इसमें पूर्वांचल के भाई-बहनों की बड़ी भागीदारी रही है। पूर्वांचल के भाइयों-बहनों ने पूरे देशभर में अपनी क्षमता, निष्ठा, योग्यता और श्रमशक्ति का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

श्री शाह ने कहा कि 2014 के लोक सभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने तय किया था कि श्री नरेन्द्र भाई मोदी प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी होंगे। श्री नरेन्द्र मोदी ने उस समय अपने एक भाषण में कहा था कि भारत माता की दो भुजाएं हैं- पश्चिम भारत और पूर्वी भारत। पश्चिम भारत का विकास बहुत हो गया है, मगर पूर्वी भारत का अभी बाकी है। प्रधानमंत्री ने वादा किया था कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार आती है, तो विकास में पिछड़ गये पूर्वांचल का विकास उसकी प्राथमिकता होगी। उन्होंने कहा कि केंद्र में नरेन्द्र मोदी सरकार के साढ़े चार वर्षों के दौरान हमने पूर्वांचल को विकास की



धारा से जोड़ने का ऐतिहासिक कार्य किया है, जिसे कांग्रेस की सरकारें लगातार अनदेखा करती रही। कांग्रेस ने अपने 70 साल के शासन काल में पूर्वांचल के साथ अन्याय किया, चाहे उत्तर प्रदेश का पूर्वी हिस्सा हो या फिर बिहार, झारखण्ड या ओडिशा।

श्री शाह ने कहा कि कांग्रेस की यूपीए सरकार ने 13वें वित्त आयोग के दौरान पूर्वांचल के विकास के लिए महज 4 लाख करोड़ रुपये दिए लेकिन पिछले साढ़े चार सालों में केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार ने 14वें वित्त आयोग के दौरान पूर्वांचल के लिए 13 लाख 80 हजार करोड़ रुपये की राशि आवंटित की, जिनमें से 11 लाख करोड़ रुपये विकास कार्यों में खर्च भी हो चुके हैं। जब तक पूर्वांचल का विकास पश्चिम भारत जैसा नहीं हो जाता, भारतीय जनता पार्टी चैन की नींद नहीं सो सकती। यह हमारा संकल्प है और हम इस संकल्प

को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। इसी उद्देश्य से उद्योग स्थापना हेतु 1856 किमी का ईस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर इन्फ्रास्ट्रक्चर बनाने का काम केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार ने किया है। इसके अतिरिक्त, बरौनी और सिंदरी का कारखाना, वाराणसी ट्रामा सेंटर, 6 मेडिकल कॉलेज, 1 आईआईएम, 2 हजार करोड़ रुपये व्यय से पूर्वांचल एक्सप्रेस वे, वाराणसी और बाकी शहरों को जोड़ने के लिए 8 हजार करोड़ रुपये के सड़क मार्ग, झारखण्ड में 9 नेशनल हाईवे, गंगा सेतु के लिए 5 हजार करोड़ रुपये, मधेपुरा में रेलवे इंजन कारखाना, नमामि गंगा अभियान के तहत पूर्वांचल के सभी शहरों के सीवरेज की व्यवस्था करने का काम केंद्र की मोदी सरकार ने पिछले चार वर्षों में कर दिखाया है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि एनआरसी का मुद्दा जब आया, तो राज्य सभा में राहुल गांधी समेत सपा-बसपा, कम्युनिस्ट, आम आदमी पार्टी- सभी मानवाधिकार के नाम पर हायतौबा मचाने लगे। ये घुसपैटिए जो बम धमाके करते हैं, देश की सुरक्षा में संध लगाते हैं, निर्दोष भारतीयों की जान लेते हैं- इनके मानवाधिकार की रक्षा करनी चाहिए या नहीं? राहुल गांधी और अरविन्द केजरीवाल को घुसपैटियों की चिंता इसलिए है, क्योंकि वे वोटबैंक की राजनीति करते हैं। भारतीय जनता पार्टी के लिए देशहित सबसे पहले है। अवैध घुसपैटिए के मुद्दे पर राहुल गांधी को अपना रुख स्पष्ट करना चाहिए। 2019 में जब भारतीय जनता पार्टी दुबारा सत्ता में आएगी तो सारे घुसपैटिए को चुन-चुनकर देश से बाहर निकाला जाएगा।

श्री शाह ने कहा कि देश में प्रधानमंत्री की सुरक्षा के साथ जो खिलवाड़ हो रहा है, उनकी हत्या की जो साजिश हो रही है- ये राहुल गांधी एंड कंपनी और अरविन्द केजरीवाल एंड कंपनी को स्पष्ट करना होगा कि देश के प्रधानमंत्री की हत्या की साजिश रचने वालों को जेल में डालने पर ये बौखलाकर हाय-तौबा क्यों मचाने लगे?

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि ये जो महागठबंधन बनाया जा रहा है, मैं चाहता हूँ ये जरा जोरदार बने क्योंकि मेरे 11 करोड़ कार्यकर्ता दो-दो हाथ करने के लिए तैयार हैं। राहुल गांधी बंगलोर से कहते हैं कि मैं पीएम बनूंगा और सेकेंडों में ममता बनर्जी का बयान आता है कि राहुल गांधी पीएम के योग्य नहीं हैं। तुरंत ही लालू जी के बेटे का भी बयान आता है कि राहुल गांधी पीएम नहीं बनेंगे। कुछ ही देर बाद अखिलेश यादव का भी यही जवाब आता है और प्रधानमंत्री बनने की लालसा की गाड़ी अपने दूसरे स्थान तक पहुंचती भी नहीं है कि तब तक मायावती जी का बयान आता है कि राहुल गांधी पीएम नहीं बन सकते। ये कैसा ढकोसला महागठबंधन है, जिसमें न एकता है, न नीति और न ही एक सोच है। ■

प्रधानमंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की पहली सभा का उद्घाटन किया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 2 अक्टूबर को विज्ञान भवन में अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की पहली सभा का उद्घाटन किया। इसके साथ ही द्वितीय आईओआरए नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री स्तरीय बैठक और द्वितीय विश्व नवीकरणीय ऊर्जा निवेशक बैठक एवं प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र के महासचिव श्री अन्तोनियो ग्युतरेस भी उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर संबोधित करते हुए कहा कि पिछले 150 से 200 वर्षों के दौरान मानव जाति ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए जीवाश्म ईंधन पर निर्भर रही है। उन्होंने कहा कि प्रकृति अब सौर, वायु और जल जैसे अन्य विकल्पों की तरफ संकेत कर रही है, जो अधिक टिकाऊ ऊर्जा प्रदान करते हैं।

इस संदर्भ में उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में जब लोग 21वीं शताब्दी में मानवता के कल्याण के विषय में बात करते हैं, तो अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन सूची में सर्वोच्च स्थान पर स्थित है। उन्होंने कहा कि जलवायु के साथ न्याय करने के संदर्भ में यह मंच महान कार्य करेगा। श्री मोदी ने कहा कि भविष्य में प्रमुख ऊर्जा आपूर्तिकर्ता के रूप में अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन, ओपेक का स्थान ले लेगा।

श्री मोदी ने कहा कि नवीकरणीय ऊर्जा के विस्तृत उपयोग का प्रभाव भारत में नजर आने लगा है। उन्होंने बताया कि भारत एक कार्य योजना के जरिए पेरिस समझौते के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में कार्यरत है। उन्होंने कहा कि 2030 तक भारत की कुल ऊर्जा आवश्यकताओं का 40 प्रतिशत हिस्सा गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित

स्रोतों द्वारा पूरा करने का लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि भारत 'निर्धनता से शक्ति' के एक नये आत्मविश्वास का विकास कर रहा है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि ऊर्जा सृजन के साथ ऊर्जा भंडारण भी महत्वपूर्ण होता है। इस संदर्भ में उन्होंने राष्ट्रीय ऊर्जा भंडारण मिशन का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि इस मिशन के तहत सरकार मांग सृजन, घरेलू निर्माण, नवाचार और ऊर्जा भंडारण पर ध्यान दे रही है।



श्री मोदी ने कहा कि सौर और पवन ऊर्जा के अलावा भारत बायोमास, बायो-ईंधन और बायो-ऊर्जा की दिशा में भी काम कर रहा है। उन्होंने बताया कि भारत में स्वच्छ ईंधन आधारित यातायात प्रणाली विकसित करने के प्रयास किये जा रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि बायो-कचरे को बायो-ईंधन में बदलकर भारत इस चुनौती को अवसर के रूप में बदलने के लिए कृत-संकल्प है। ■



कमल संदेश अब इंटरनेट पर भी उपलब्ध

लॉग इन करें:

www.kamalsandesh.org

राष्ट्रीय विचार की प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका

भारत-रूस के बीच आठ समझौतों पर हस्ताक्षर एस-400 वायु रक्षा प्रणाली पर हुआ समझौता



प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और रूसी राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन के बीच बातचीत के बाद 5 अक्टूबर को दोनों देशों ने आठ समझौतों पर हस्ताक्षर किए जिनमें अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग, रेलवे समेत कई अन्य क्षेत्रों में सहयोग के विषय शामिल हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी और रूसी राष्ट्रपति श्री पुतिन ने 19वें भारत रूस वार्षिक द्विपक्षीय शिखर सम्मेलन के दौरान मुलाकात की और अनेक द्विपक्षीय, क्षेत्रीय एवं वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की।

दरअसल, प्रधानमंत्री श्री मोदी और राष्ट्रपति श्री पुतिन के बीच वार्ता के बाद भारत, रूस ने पांच अरब डॉलर के एस-400 वायु रक्षा प्रणाली समझौते पर हस्ताक्षर किए। बैठक के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने संयुक्त संवाददाता संबोधन में कहा कि भारत-रूस मैत्री अपने आप में अनूठी है। इस विशिष्ट रिश्ते के लिए राष्ट्रपति पुतिन की प्रतिबद्धता से इन संबंधों को और भी ऊर्जा मिलेगी।

उन्होंने कहा कि “हमारे बीच प्रगाढ़ मैत्री और सुदृढ़ होगी और हमारी विशेष और विशिष्ट सामरिक गठजोड़ को नई बुलंदियां प्राप्त होंगी। श्री मोदी ने कहा कि राष्ट्रपति पुतिन के साथ वार्ता ने भारत-रूस के बीच रणनीतिक साझेदारी को नई दिशा दी है। वहीं, रूस के राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन ने कहा कि आतंकवाद एवं मादक

पदार्थों की तस्करी के खतरे से निपटने के लिए भारत के साथ सहयोग बढ़ाने पर सहमति जताई है।

दूसरी ओर, दोनों देशों के बीच हुए समझौते को संबंधों को नई दिशा प्रदान करने वाला करार देते हुए प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि मानव संसाधन विकास से लेकर प्राकृतिक संसाधनों तक, कारोबार से लेकर निवेश तक, नाभिकीय ऊर्जा के शान्तिपूर्ण सहयोग से लेकर सौर ऊर्जा तक, प्रौद्योगिकी से लेकर बाघ संरक्षण तक, सागर से लेकर अंतरिक्ष तक....भारत और रूस के सम्बन्धों का और भी विशाल विस्तार होगा।

उन्होंने कहा कि आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष, अफगानिस्तान तथा हिंद प्रशांत के घटनाक्रम, जलवायु परिवर्तन, एससीओ, ब्रिक्स जैसे संगठनों एवं जी20 तथा आसियान जैसे संगठनों में सहयोग करने में हमारे दोनों देशों के साझा हित हैं।

श्री मोदी ने कहा, “हम अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में अपने लाभप्रद सहयोग को जारी रखने पर सहमत हुए हैं।” दोनों देशों ने बदलते विश्व में बहु-ध्रुवीय और बहु-स्तरीय व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने पर एकमत होने पर जोर दिया। प्रधानमंत्री ने भारत के अंतरिक्ष मिशन “गगनयान” में पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन पर रूसी राष्ट्रपति को धन्यवाद दिया। ■

सर्जिकल स्ट्राइक करके सैनिकों ने मुंहतोड़ ज़वाब दिया: नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 30 सितंबर को 'मन की बात' कार्यक्रम की 48वीं कड़ी में कहा कि शायद ही कोई भारतीय हो सकता है जिसको हमारे सशस्त्र बलों पर, हमारे सेना के जवानों पर गर्व न हो। प्रत्येक भारतीय चाहे वह किसी भी क्षेत्र, जाति, धर्म, पंथ या भाषा का क्यों न हो- हमारे सैनिकों के प्रति अपनी खुशी अभिव्यक्त करने और समर्थन दिखाने के लिए हमेशा तत्पर रहता है।

उन्होंने कहा कि कल भारत के सवा-सौ करोड़ देशवासियों ने पराक्रम पर्व मनाया था। हमने 2016 में हुई उस सर्जिकल स्ट्राइक को याद किया, जब हमारे सैनिकों ने हमारे राष्ट्र पर आतंकवाद की आड़ में छद्म युद्ध की धृष्टता करने वालों को मुंहतोड़ ज़वाब दिया था।

श्री मोदी ने कहा कि देश में अलग-अलग स्थानों पर हमारे सशस्त्र बलों ने प्रदर्शनी लगाये, ताकि अधिक से अधिक देश के नागरिक खासकर युवा पीढ़ी यह जान सके कि हमारी ताकत क्या है। हम कितने सक्षम हैं और कैसे हमारे सैनिक अपनी जान जोखिम में डालकर के हम देशवासियों की रक्षा करते हैं।

उन्होंने कहा कि हम शांति में विश्वास करते हैं और इसे बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं, लेकिन सम्मान से समझौता करके और राष्ट्र की सम्प्रभुता की कीमत पर कतई नहीं। भारत सदा ही शांति के प्रति वचनबद्ध और समर्पित रहा है। 20वीं सदी में दो विश्वयुद्धों में हमारे एक लाख से अधिक सैनिकों ने शांति के प्रति अपना सर्वोच्च बलिदान दिया और यह तब, जब हमारा उस युद्ध से कोई वास्ता नहीं था। हमारी नज़र किसी और की धरती पर कभी भी नहीं थी। यह तो शांति के प्रति हमारी प्रतिबद्धता थी।

लोक संग्राहक थे बापू

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि पूज्य बापू ने किसानों, गांवों, श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा, स्वच्छता, शिक्षा के प्रसार जैसे अनेक विषयों पर अपने विचारों को देशवासियों के सामने रखा है। इसे गांधी चार्टर भी कहते हैं। पूज्य बापू लोक संग्राहक थे। लोगों से जुड़ जाना और उन्हें जोड़ लेना बापू की विशेषता थी। ये उनके स्वभाव में था। यह उनके व्यक्तित्व की सबसे अनूठी विशेषता के रूप में हर किसी ने अनुभव किया है। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को ये अनुभव कराया कि वह देश के लिए सबसे महत्वपूर्ण और नितांत आवश्यक है। स्वतंत्रता संग्राम में उनका सबसे बड़ा योगदान यह रहा कि उन्होंने इसे एक व्यापक जन-आंदोलन बना दिया। स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में महात्मा गांधी के आह्वान पर समाज के हर क्षेत्र,

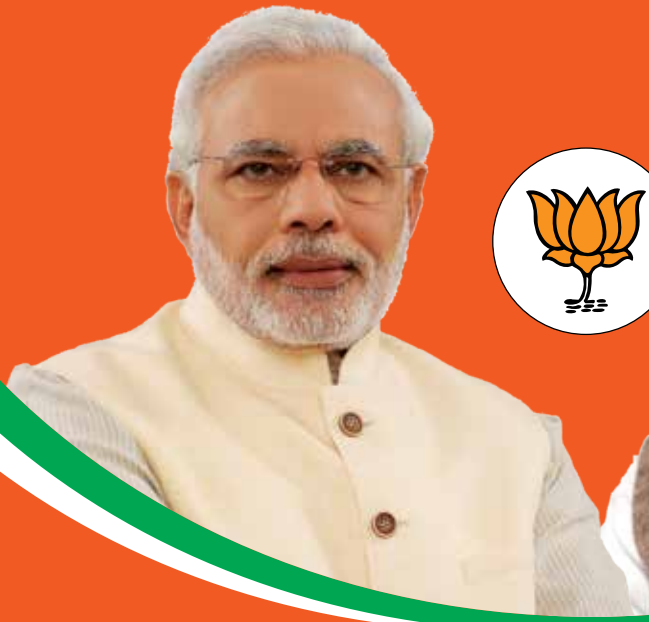
हर वर्ग के लोगों ने स्वयं को समर्पित कर दिया।

श्री मोदी ने कहा कि बापू ने हम सब को एक प्रेरणादायक मंत्र दिया था, जिसे अक्सर, गांधी जी का टैलिस्मन (ताबीज) के नाम से जाना जाता है। उसमें गांधी जी ने कहा था, "मैं आपको एक जन्तर देता हूं, जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे तो यह कसौटी आजमाओ। जो सबसे ग़रीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे, उसे कुछ लाभ पहुंचेगा! क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा! यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है। तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह



मित रहा है और अहम् समाप्त हो रहा है।"

प्रधानमंत्री ने कहा कि जब गांधी जी ने कहा था कि सफाई करोगे तो स्वतंत्रता मिलेगी। शायद उनको मालूम भी नहीं होगा ये कैसे होगा - पर ये हुआ, भारत को स्वतंत्रता मिली। इसी तरह आज हम को लग सकता है कि मेरे इस छोटे से कार्य से भी मेरे देश की आर्थिक उन्नति में, आर्थिक सशक्तिकरण में, ग़रीब को ग़रीबी के खिलाफ़ लड़ाई लड़ने की ताकत देने में मेरा बहुत बड़ा योगदान हो सकता है और मैं समझता हूँ कि आज के युग की यही सच्ची देशभक्ति है, यही पूज्य बापू को कार्याजलि है। ■



कमल संदेश के आजीवन सदस्य बने
प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह
आज ही लीजिए कमल संदेश की सदस्यता और
दीजिए राष्ट्रीय विचार के संवर्धन में अपना योगदान !

सदस्यता प्रपत्र



नाम :

पूरा पता :

..... पिन :

दूरभाष : मोबाइल : (1)..... (2).....

ईमेल :

सदस्यता	एक वर्ष	₹350/-	<input type="checkbox"/>	आजीवन सदस्यता (हिन्दी/अंग्रेजी)	₹3000/-	<input type="checkbox"/>
	तीन वर्ष	₹1000/-	<input type="checkbox"/>	आजीवन सदस्यता (हिन्दी+अंग्रेजी)	₹5000/-	<input type="checkbox"/>

(भुगतान विवरण)

चेक/ड्राफ्ट क्र. : दिनांक : बैंक :

नोट : डीडी / चेक 'कमल संदेश' के नाम देय होगा।
 मनी आर्डर और नकद पूरे विवरण के साथ स्वीकार किए जाएंगे।

(हस्ताक्षर)



अपना डीडी/चेक निम्न पते पर भेजें
 डॉ. मुकजी स्मृति न्यास, पीपी-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003
 फोन: 011-23381428 फैक्स: 011-23387887 ईमेल: kamalsandesh@yahoo.co.in

कमल संदेश: राष्ट्रीय विचार की प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका



नई दिल्ली में रूसी राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन का स्वागत करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



नई दिल्ली में भारत-रूस व्यवसाय सम्मेलन के दौरान रूसी राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



अंजार (गुजरात) में मुंद्रा एलएनजी टर्मिनल और अंजार-मुंद्रा गैस ट्रांसमिशन प्रोजेक्ट का शुभारंभ करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और साथ में गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय रूपानी व अन्य



नई दिल्ली में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय स्वच्छता सम्मेलन का शुभारंभ करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और साथ में केंद्रीय मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज, श्री मनोज सिन्हा, सुश्री उमा भारती व अन्य



नई दिल्ली में एक कार्यक्रम के दौरान संयुक्त राष्ट्र के महासचिव श्री अन्तोनियो ग्युतेरेस से 'चेम्पियंस और द अर्थ' पुरस्कार ग्रहण करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



देहरादून में प्रथम उत्तराखंड निवेशक सम्मेलन का शुभारंभ करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और साथ में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत व अन्य

1st Advance Estimates (2018-19)

Record Production of Kharif Foodgrains 141.59 MT

HIGHLIGHTS

Sugarcane	383.89 million tonnes
Rice	99.24 million tonnes
Oilseed	22.19 million tonnes
Maize	21.47 million tonnes

Digital Payments

Growth in the number of Digital Payments through BHIM-UPI

405.87 Million

312.02 Million

235.65 Million

July 2018 August 2018 Sept 2018

BHIM UPI

Landmark step in purchase of agricultural commodities

- The government has fulfilled its promise made to farmers. Cabinet approves Pradhan Mantri Annadata Aay Sanrakshan Abhiyan (PM-AASHA).
- The scheme includes Price Support Scheme (PSS), Bhavantar Yojana and Private Procurement & Stockist Scheme.
- During 2010-14, total procurement was Rs. 3500 crore only whereas during 2014-18, it has risen 10 times to Rs. 34,000 crore.
- The Cabinet today decided to give additional government guarantee of Rs 16,550 crore making it Rs 45,550 crore in total. In addition to this, budget provision has also been increased to Rs. 15,053 crore.

Empowering the Entrepreneurs

Under Pradhan Mantri Mudra Yojana,
 a total number of **14.16 Crore loans**
 with amount of **₹ 6.53 Lakh Crore**
 have been approved

As on 28-09-2018